तेल की पकौड़ियाँ

डॉ. प्रभाकर माचवे

भारतीय ज्ञानपीठ
काशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेलवणी पकौड़ियाँ

डॉ० प्रभाकर माचवे

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : हिन्दी ग्रन्थाङ्क–१६०
ग्रन्थमाला सम्पादक-नियामक : लक्ष्मीचन्द्र जैन

TEL KI PAKOURIYAN
(Satire)
Dr. PRABHAKAR MACHAVE

Bhartiya Jnanpseth Kashi
Publication
First Edition
Price Rs. 2/-
1962

प्रकाशक
मंत्री भारतीय ज्ञानपीठ, काशी
मुद्रक
सन्मति मुद्रणालय वाराणसी
प्रथम संस्करण १९६२
मूल्य दो रुपये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुक्रम

स्वान्तः दुखाय १

प्याज़ी पकौड़ियाँ

१. अथ तैल माहात्यम् ९
२. वृद्ध पालम एअरोड्रोमपर ११
३. काज़ीरंगा १५
४. दिल्लीके औद्योगिक मेलेमें १६
५. गाँजा-नीति १८
६. 'शॉवर करप्ट्स' १९
७. निदान २०
८. लघ्वारण्योपनिषद् २१
९. न्यू डिटरमिनिज्म २२
१०. नवीन रीति-काल १३
११. बाज़ारू सभ्यता २७
१२. दरद न जाणे कोय २८
१३. एक दशक [का अनुभव] २९
१४. सोनेका हिरन ३०
१५. गाथा सप्तशती ३१
१६. फगुनाहट ३२
१७. चिट्ठी मिसेज़ राधाके नाम ३३
१८. उत्तर श्रीकिरशनजीको ३३
१९. नींव ३५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२०. डरू संस्कृति ३७
२१. सम्पादक ३८
२२. सरस्वतीके ग्राहक ४०
२३. कालेजका बोर्डिंग ४१
२४. क़िता और एक रुबाई ४२
२५. तीन कविताएँ ४३
२६. तेरापाई गुडीका लामा ४५
२७. बम्बई ४६
२८. सरकसके जोकरका वक्तव्य ४८
२९. लॉली पॉप ४९
३०. कलाकार ५२
३१. एक (यक्ष)–प्रश्न ५३
३२. नये पहरेदार ५४
३३. कविता और कम्पोज़ीटर ५५

बेगुनी पकौड़ियाँ

१. यह आंग्लो-हिन्दिया ५९
२. यूनियनके दो बकरे ६१
३. ईश्वर या / और बादल ६४
४. हर्सन रोड सान्तीलाल ६७
५. उल्टफेर ७०
६. जिन्दा लोकगीत-निर्माण फ़ैक्टरी ८६
७. 'अमरूद' इलाहाबादी ९१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वान्तः दुखाय

बचपनमें अक्सर निबन्धको विषय देते थे, 'भविष्यमें क्या बनोगे ?' मैंने एक बार सोचा था लिखूँ—"होटलवाला'।

अगर मैं सचमुच होटल चलाता तो दो सम्भावनाएँ होतीं : मैं आज जो लिखता हूँ उससे बहुत अच्छा लिखता; या शायद लिखनेका गौण कर्म छोड़ देता, एक होटलसे फिर दूसरा बड़ा होटल और उससे तीसरा और बड़ा होटल बनाता'....(अपने होटलका नाम 'शेख चिल्ली' होता)।

लेखकके लिए जो कमानेके लिए और धन्धे करना ज़रूरी होते हैं; उनमें प्रोफ़ेसरी सबसे घटिया, पत्रकारी उससे कुछ बढ़कर घटिया; पर लिखनेसे दूर-दराजका सम्बन्ध न रखनेवाले धन्धे करना सबसे बढ़िया होता है। रैदास जूते गाँठते थे; नामदेव छीपा थे; और 'प्रसाद' जी सुँघनी साहु की दूकान चलाते थे। अभी मैंने एक 'षष्ठिव्रत' नामक भारतीय अँगरेज़ी नव-कविका संग्रह पढ़ा जिसमें उनके परिचयमें लिखा है, वे नयी दिल्लीमें सड़कके किनारेपर जूते पालिश करते थे, बादमें 'स्टेट्समैन' पत्रमें उन्होंने नौकरी की। जनतन्त्रमें कोई काम हलका नहीं है। और मुझे अपनी विद्यार्थी दशाके दिन याद आते हैं जब मैं 'साइनबोर्ड पेण्टिङ्ग' भी करता था। लेखकके लिए बहुत ज़रूरी है कि वह ज़िन्दगीको काफ़ी नज़दीकसे देखे; उसमें मुब्लिता न हो जाये।

जिस क़िस्मके लेखककी यह किताब आपके सामने है, वह क्रमशः जीवनमें इतने सफल-असफल 'रोल' अदा कर चुका है; अपने माता-पिताकी अन्तिम सन्तान, चौदहवें वर्षमें मैट्रिककी परीक्षा और उन्नीसवें वर्षमें दर्शनमें एम. ए. की परीक्षा देनेवाला विद्यार्थी; गढ़कुण्डेश्वरमें असफल ढंगसे गा-गाकर लम्बी कविता पढ़नेमें प्रयत्नशील हिन्दी कवि; इन्दौरकी मध्यभारत हिन्दी साहित्य-समितिके लड़ाकू 'विशारद'के विद्यार्थी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के नाते तबके 'वीणा' सम्पादकने यह घोषणा की—'यह भविष्यमें 'निराला' की तरह साहित्यिक सन्निपात (?) लिखने वाला होगा !' बम्बईकी सन् ३४ की कांग्रेसमें विद्यार्थी-नेता; आगरेमें कानूनका विद्यार्थी और उग्र वामपक्षी राजनीतिमें रोमाण्टिक रुचि रखनेवाला 'रँगरूट'; इन्दौर मज़दूर-संघका मन्त्री; शिक्षा-मनोविज्ञान और तर्कशास्त्रका अध्यापक; 'उग्र'ने प्रोफ़ेसर कोटेशन्स उपनाम रखा; चित्रकलाका सफल विद्यार्थी; पत्रकार और पेशेवर भाषणकर्ता; गाँधीजीके आश्रमका एक निवासी; सन् '४२ में राजनैतिक पीड़ितोंकी सहायतामें घर-घर घूमना, जेलोंमें किताबें भिजवाना, कार्यकर्ताओंके परिवारोंका पोषणकार्य; युद्धकालसे ही व्यंगलेखनकी ओर प्रवृत्ति—'संघर्ष', 'हंस', 'चकल्लस', 'शनीचर' आदिके कई लेख साक्षी हैं; सन् '४८ में एक कोशका सहसम्पादन; भारतवर्षकी तीर्थ-यात्रामें रुचि रखनेवाला व्यक्ति—'कमला' (वाराणसी) में तब प्रवास-वर्णन छपे तो शान्तिप्रिय द्विवेदीने मुझे 'चम्पू'-लेखक और टाइप-राइटर' कहा—कई उपनामों-छद्मनामोंसे लिखनेकी प्रवृत्ति; रेडियोके लिए बहुत-से हास्य-व्यंग्य-पूर्ण एकांकी, वार्ताएँ आदि लिखनी पड़ीं; इलाहाबादी 'परिमल'-मय और ग़ैर-परिमली साहित्यिक अड्डोंका सूक्ष्म-अवलोकन तथा अवभर्त्सन (समस्त गुटबाज़ियोंसे मुझे नफ़रत है; इसलिए 'संघ' शब्दसे मेरी जन्मना दुश्मनी है); अपनी इस वृत्तिके कारण साहित्यके सभी 'आम्नायों'से निष्कासित चिर-रेफ्यूजी, शमशेर बहादुर सिंहके शब्दोंमें 'साहित्यिक विदूषक'; 'आकाशवाणी'के दिनोंमें कई देवी-देवताओं (तथा उसके विपरीत व्यक्तियों) के मेरु-मन्थनमें 'विष-पायी'; फिर कई बार भारत-भ्रमण; एक केन्द्रीय साहित्यिक संस्थामें असिस्टंटी (इसमें 'स्टंट' शब्द जो सन्निहित हो जाता है, वह संस्थाके कारण नहीं बल्कि मेरे व्यक्तित्वके कारण); विदेश-यात्रा (जिसे प्रेमी मित्रोंने 'पाताल-प्रवेश' और 'पाताल-भैरवी' के वज़नपर 'पाताल-यंत्री' बना दिया, फिर भी उसमें-से उबरकर) और पुनर्देशानुसरण—और इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारी ४५ बरसकी यात्रा—'रोल'वाली फ़िल्ममें कई मित्रोंकी थीसिसों-के आउटलाइन बनाना, उन्हें पूरा लिख देना, रिवाइज़ करा देना और कभी कभी जाँचना भी करते-करते खुद एक थीसिस लिख डालना और एक 'डाक्टरेट'का स्टेथस्कोप गले लटका लेना (शिवजीके 'गलेऽवलम्बलम्बि-ताम्' की तरह, कई 'नगुरे' शिष्योंको साहित्यिक इसलाह; कई ग्रंथोंकी भूमिकाएँ और कई लेखकोंको सच बोलकर नाराज़ करना—हिन्दीमें इस लेखकके क़लम-कुठारसे आहत न हुआ हो ऐसा बिरला ही दम्भी, अहंकारी, 'हिपाक्रिट' बचा होगा—और इस खुदाई फ़ौजदारीमें अपना खुदका बेहद नुक़सान कर लेना और स्वार्थका कोई खयाल न करना। जितना पत्र-पत्रिकाओंमें लिखा बिखरा है, उसे भी, उबेर न पाना·····

फिर भी इस किस्मके हलके-फुलके लेखनके इस लेखकके तीन और संग्रह छप चुके हैं :

—खरगोशके सींग (सन् '५० का प्रथम संस्करण; सन् ६० में दूसरा संस्करण; प्रकाशक : नीलाभ प्रकाशन, खुसरो-बाग़, इलाहाबाद)।

—बेरंग (सन् '५७ ; नव साहित्य प्रकाशन, मुलतानी ढाँढा, नई दिल्ली)।

—गलीके मोड़पर (एकांकी संग्रह; सन् '५९; दत्त ब्रदर्स, अजमेर)

और 'स्वप्न-भंग' कविता संग्रहमें भी कई व्यंगमय सॉनेट हैं।

इस संग्रहका चुनाव लेखकने नहीं किया है; यह संग्रह दो-तीन वर्ष पहले ही छप जाना चाहिए था। यह सफ़ाई इसलिए कि 'निरला' जी-की कविता 'तेलकी पकौड़ी' से पुस्तकका शीर्षक लिया गया था। किन्तु अब वे जीवित नहीं रहे···

इस संग्रहकी कई रचनाएँ कई लोगोंको बहुत ही बुरी, भोंडी, भद्दी, रस-हीन, अनौचित्यपूर्ण—संभव है अनीतिमय और 'अ-शिव' भी लगेंगी यह जितनी ही बुरी किसीको लगे, मैं आग्रह करूँगा कि वही व्यक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीघ्र-कोप न करके दुबारा ठंडे दिलसे उन्हें पढ़े। और शायद फिर उस पाठकको यह अनुभव होने लगेगा कि उसकी पहली प्रतिक्रिया शायद सोलह आने सही नहीं थी....

हिन्दी हास्य और व्यंगका स्तर और भी अर्थपूर्ण, पैना, स-चोट और ऐसा होना चाहिए कि समाज और व्यक्तिके मनकी विकृतियोंपर वह सीधे आघात कर सके। आज क्या हिन्दी, क्या सभी भारतीय भाषाओंमें विचारोंका साहस रखनेवाले निर्भीक हास्य-व्यंगलेखक कम होते जा रहे हैं। कारण कुछ भी हों, पर ऐसा अगर हुआ कि हर हिन्दी पाठक और लेखक इतना नाजुक-मिजाज और तुनुक-मिजाज हो गया कि जरा-सी भी छेड़-छाड़, चुहुल-चिकौटी, धौल-धप्पा, हाहा-हीही वह बर्दाश्त न कर सके, तो बस फिर साहित्यिक मूल्यों और जीवनके मूल्योंका भविष्य खतरेमें समझ लीजिए। ऐसे लोगोंको मानसिक चिकित्सकके पास जाना चाहिए।

मेरे व्यंगोंकी विशेषता यह है कि उसमें मैं अपनेको भी नहीं छोड़ता—बल्कि "आत्मवत् सर्वभूतेषु" मैं देखता हूँ—जैसा भुतहा मैं खुद हूँ औरोंमें भी उसी भूतको नाचते देखता हूँ। मैं यह दावा नहीं करता कि मेरे लिखनेसे हिन्दीमें कोई चार चाँद लग गये या हिन्दी-माताके किरीट-कुंडलोंकी या करधनी-किंकिणीकी शोभा इनसे बढ़ गयी—पर इन पन्नोंको पढ़कर कहीं-कहीं कभी-कभी पढ़नेवाला जरूर मुस्कुरा उठेगा, खीझेगा, कभी-कभी उसे लेखकको दस-पाँच गालियाँ देनेकी इच्छा पैदा होगी; और जैसा मेरी कुछ व्यंग रचनाओंके बाद मुझे मारनेकी धमकियों-के पत्र मिले थे, वैसी भी कुछ इच्छा शायद किसीको हो। पर निवेदन इतना ही है कि ये रचनाएँ कोई आजकी लिखी नहीं हैं। गये बीस साल या अधिकके लिखनेमें-से कुछ छाँटी हैं, जिनका लेखनकाल, लेखनप्रसंग भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना उस देशकालसे ऊपर एक सार्वजनीन सर्वकालीन सार्वदेशिक रूप।

मैं हँसता हूँ पर उसके पीछे, सच मानिए, बहुत-सा दर्द (और हम-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्दी भी) छिपा हुआ है। और यह बात सिर्फ़ बातकी-बात नहीं है। मेरी किताबें पढ़नेवालोंने मुझसे कहा है कि ऐसी व्यंग या हास्यकी शैली, बिना व्यापक सहानुभूतिके, सहज पैदा नहीं होती। मेरे लिए व्यंग कोई पोज़ या अन्दाज़ या 'लटका' या बौद्धिक व्यायाम नहीं—पर एक आवश्यक अस्त्र है। सफ़ाई करनेके लिए किसीको तो हाथ गन्दे करने ही होंगे, किसी-न-किसीको तो बुराई अपने सर लेनी ही होगी। पर भाई साहब, मैं कोई समाज सफ़ाई-संघका मेम्बर नहीं हूँ, न मैंने ठेका उठाया है कि सब जगह दाग़ और ख़राबियाँ ही देखूँ। मैं सिर्फ़ नकारात्मक, निषेधात्मक, कड़ुआहट या चरपराहटमें विश्वास नहीं करता—तेलकी पकौड़ीमें एक अलग तरहका स्वाद है जो सिर्फ़ तीता-तीता और गरम-गरम ही नहीं है। और वह सिर्फ़ स्वाद-ही-स्वाद तो बिलकुल नहीं है। लेकिन यह सब बातें मैं किसी 'पाक-कला' पुस्तककी तरहसे आरम्भमें ही क्यों बताऊँ? इस 'पुडिंग'का स्वाद उसे चखनेसे 'ताल्लक रखे हैं'। अब उन बुजुर्गों और कमज़ोर हाज़मेके 'सभ्य' लोगोंसे क्या कहूँ कि जो बिना स्वाद चखे ही, 'अब्रह्मण्यम्'; 'शांतं पापं,' 'छिः छिः' कहकर इससे बचते और दूर-दूर रहते हैं। उनके लिए तो 'ग़ालिब'ने ठीक ही कहा था :

मुझसे मत कह, "तू हमें कहता था अपनी ज़िंदगी"
ज़िंदगी-से भी मेरा जी इन दिनों बेज़ार है?

सन् '६० की सैनफ्रैंसिस्कोकी एक घटनासे यह आरम्भ ढिंढोरचीपन बन्द करता हूँ। मेरे पुराने विद्यार्थी और तब उज्जैनके मेयर श्री प्रकाश-चन्द्र सेठी एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेरेन्समें पधारे। मैं तब वहाँ पढ़ता था। एक शामको हम मटरगश्ती करते हुए 'लिटिल इंडिया', 'ताज आफ इंडिया' और 'पंजाब' नामक तीन होटलोंमें घूमे, जहाँ भारतीय पकवान और व्यंजन बनते थे, और परोसे जाते थे—और अन्ततः एक चीज़ वहाँ चाहे बहुत महँगी क्यों न हो हमने प्राप्त की और वह थी—

'तेलकी पकौड़ी'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यानी समझिए पूर्व-पश्चिमका भेद मिट गया; गोरे-काले दृष्टिभेद अभेदमें ओझल गये—रसना रसमयी हो गयी और मैंने बादमें 'धर्मयुग'में एक लेख लिखा था, अमरीका और पकौड़ी (जो संग्रहमें नहीं है)।

मैं चाहूँगा कि मेरे पढ़नेवाले मेरी ग़लतियाँ या खूबियाँ मुझे बतलायें। आजकल पाँच पैसेका पोस्टकार्ड और दस पैसेका इन्लैंड लेटर मिलता है। हिन्दीके उन अभागे लेखकोंमें-से मैं भी एक हूँ जिन्हें यही नहीं पता है कि उनका पाठक है कौन और कहाँ? शायद कुछ संस्थाएँ, लाइब्रेरियाँ, प्रादेशिक सरकारें और ऐसी ही 'एब्स्ट्रैक्ट' चीजें हिन्दी पुस्तकोंकी ग्राहक हैं! लेकिन मेरी किताब मैंने अलमारियोंमें बन्द रहनेके लिए नहीं लिखी है—किसी ज़िंदादिलके मनोरंजनके लिए लिखी है। कभी-कभी रंजनमें 'रंज' भी हो जाये तो बुरा न मानिए; कुछ लोगोंकी आदत होती है हँसते-हँसते रुलायी आ जाती है।

तेलकी पकौड़ीकी मिर्चें या गरमाहट किसीको अगर चुभे, तो निवेदन है कि—व्यंग मैंने किसी भी एक व्यक्तिको कभी सामने रखकर नहीं लिखे हैं—मेरे लिए व्यक्ति किसी न किसी अच्छाई-बुराईके प्रतिनिधि बनकर ही सामने आये हैं। अगर किसीको इस आईनेमें अपनी ही परछाईं नज़र आ जाये तो आईनेको दोष न दें।

मैंने भाषाके साथ भी कहीं-कहीं खिलवाड़ किया है, ज्यादती की है, स्वतन्त्रता ली है। यह भी मैंने जान-बूझकर किया है। कुछ सुधी विद्वानों-ने इससे यह निर्णय निकाला है कि मैं हिन्दीके लिए 'आउटसाइडर' हूँ; मेरा हिन्दी भाषाका ज्ञान कच्चा है; मैं अर्थपूर्ण, शैलीयुक्त, सरपट, इस्त्री-बन्द, क़ानूनको माननेवाली, पाप-भीरु 'चेस्ट' हिन्दी (एक साहबने इसका अनुवाद सतीत्वपूर्ण हिन्दी किया) नहीं लिख सकता। उनका निष्कर्ष सही हो सकता है। विद्वानोंकी वैसी कँटी-छँटी, साफ़-सुथरी, ठंडी और सपाट हिन्दीसे मुझे ऊब आती है—शायद वह भाषा व्यंग-निबन्धोंके लिए उपयुक्त नहीं है; सरकारी अखबारोंके सम्पादकीयों या परीक्षार्थियोंकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तर-पुस्तिकाओंके लिए चाहे उपयुक्त हो। फिर भी हिन्दीके सौ-टंच प्र-शुद्ध 'परयोग'का मेरा दावा नहीं है। प्रभाकर मेरा जन्म-नाम है, मैंने 'परभाकर'की 'प्रीक्षा' नहीं पास की है, न-ही उस उपाधिको अपना सर-नामा या 'उपनाम' बनाया है'। सो गरम-गरम पकौड़ियाँ खाइए, और मुझसे पानी मत माँगिए।

प्याऊ कहीं उधर दूसरी तरफ़ है।

नई देहली,
२०-८-६२

—प्रभाकर माचवे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्याज़ी पकौड़ियाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ तैल माहात्यम्

भीड़में सुने संभाषणके टुकड़े

—तेल देखो, तेलकी धार देखो !

—कहाँ राजा भोज, कहाँ गँगुआ तेली !

—तेलको संस्कृतमें 'स्नेह' कहते हैं

—तो तेली नहीं स्नेहीजन कहो, सनेही

—बड़े तैलबुद्धि हैं आप ?

—पोअरिंग वॉटर ओवर ट्रबल्ड ऑएल

—आगमें तेल छिड़कना है !

—चाहे बालूमें-से तेल निकल आये, परन्तु मूर्खके हृदयमें समझ आनी मुश्किल है ।

—शनी महाराजको तेल चढ़ाइए !

—अजी इन तिलोंमें तेल कहाँ ?

—अगर आँ तुर्क-शीराज़ी बदाते आरद दिले-मा रा
बखाले-हिन्दुअश बख्शम् समरकंदो-बुखारा रा

(अगर वह शीराज़-निवासी प्रियतम मुझपर कृपा करे तो उसके काले तिलकी क़सम, मैं उसपर समरकंद और बुखाराकी जागीरें निछावर कर दूँ ।—हाफिज़)

—अजी वह तिल-तिल करके घुलकर मर गयी

—खुल जा समसम (सीसॅम = तिल)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—क्या तिलका ताड़ बना दिया जी !
—तैल मालिश, चंपीऽऽ
—इनका मेल नहीं हो सकता, पानी और तेलकी तरह !
—तेलके रंग जलरंगोंसे अधिक टिकाऊ होते हैं
—"तैले तैले न वाणिज्यम्...."
('शैले शैले न माणिक्यम्' की पैरोडी)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुद्ध पालम एअरोड्रोमपर

फिरसे बुद्ध यहाँपर आये अपने ही घर
जिसको कहते भारत सुन्दर।
देखा इन ढाई हज़ार बरसोंमें सचमुच
कितना बदल चुका है सब कुछ।
आये बुद्ध, सुना पालम-विमानतलपर नारी-नर
तत्पर, सत्वर, लाखों पीले-पीले चीवर
राज और शासनके अफ़सर
पीला एक गुलाब टाँककर
खड़े हुए थे बना समज्या
मानो सब ही ले-लेंगे अब अहा, प्रव्रज्या !
कई कैमरे खड़के,
इतना प्रकाश क्यों कर तड़के,
और मचानोंपर यों चढ़के ?
आह, स्वयंप्रभ ज्ञानालोकित
सौम्य तथागतकी मुद्राको,
लेन्स कहाँ ले पावेगा ?
यह भी रस्म हुई पूरी फिर
झटसे एक प्रेस-कान्फरेन्स बुलायी
कई जुटे पत्रोंके भाई।
लगी प्रश्नकी झड़ी
मूर्खता-भरी अक़्लसे गढ़ी।
पूछ रहे आपकी राय क्या ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीटोके बारेमें, मीडोके बारेमें
प्राहीबीशन, कॉण्ट्रासेप्शन,
गंदे ग्रन्थोंका प्रास्क्रीप्शन,
युद्धोंकी अनिवार्य कड़ीमें,
हिन्दीकी लालोंसे भरी हुई गुदड़ीमें,
कब पहुँचेंगे हम मंगल-तारेमें ?
और आपकी प्रिय अभिनेत्री ?
कौन आपका प्रिय साबुन है ?
किस रेजरसे, और ब्लेडसे
आप नित्य श्मश्रु हैं करते ?
गौतमने सब प्रश्न सुन लिये
मौन मुस्कराकर वह बोले—
नहीं मुँडाया हमने सिर जो
आते ही प्रश्नोंके ओले !
हम न आपके एक प्रश्नका भी
देंगे कोई भी उत्तर
नहीं हमारे पास राजनैतिक वह चाभी
जो कि अहल्याओंको कहीं बनाती पत्थर
नहीं हमारी कस्तूरीसे फरित नाभी,
(हिन्दी नहीं ग़रीबकी जो सबकी भाभी)
सब कुछ दुखसे भरा हुआ है पथपर
देखा तब सिद्धार्थ चले तो
कई वृद्ध चीथड़े पहन कर
कहीं गेन्शनोंके खातिर था
कहीं पुरानी फटी बर्दियाँ पहने जर्जर
चले जा रहे थे गिरोह बन

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारा यही लगाते—
जो बूढ़ेकी नहीं करेगा फ़िक्र वही बूड़ेगा
और कई रोगोंसे जर्जर
कहीं पीलिया, कहीं-कहीं चेचकसे पीड़ित,
ढीले धीले अंजरपंजर
स्वास्थ्य-मंत्रियोंको जो कोर्स चले जा रहे !
और मरणकी बात न पूछे
देखा सब कुछ कई जनोंने
कुछ तो करुणा दरसाकर शब्दोंमें
किसी पासके होटलमें घुस गये
गर्म पी चाय
या कि कह—'ब्वाय'....
मँगायी बीअर
अथवा जिन या विस्की
चुस्की-चुस्की पीकर दर्द भुलाते
मनमें कहते 'हाय-हाय' अकुलाते
और किसीने गुस्सेमें आ
मुट्ठी बाँधी और लगाया नारा ऽ ऽ
दुनियाके सब रोगी-कोढ़ी
दुनियाके सब बूढ़ो
दुनियाके सब मरनेवालो
गोल बाँध कर क्रान्ति करो अब,
इन्क़लाब या जिहाद बोलो—
यमराजाके खिलाफ़ मोर्चा
ले जाना ही होगा।
बुद्ध मुस्कराये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नैनोंसे केवल एक अश्रु ही ढुरका।
"यह अज्ञान! दुक्खका कारण"!
"नियति मनुजकी अपनी तृष्णा!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक सॉनेट

काज़ीरंगा[1]

जँगली जानवरोंमें देखा सह-अस्तित्व तथा सह-चिन्तन
देखा बन्धुभाव, समता औ' स्वतन्त्रताका पूरा शासन।
गेंडे, जँगली हाथी, भैंसे, हिरन सभी ये शाकाहारी
बड़े-बड़े ये दिग्गज, मोटा दिमाग़, चमड़ा, काया भारी।
एरका (हथिया घास) कई मीलों तक कीचड़, केवल दलदल
कई घूमते थे इकले ही, कई घूमते वहाँ बाँध दल।
पानीमें मीलों तक फैली हाइसिन्थ, तरु-लतादि अनगिन
पक्षी क़िस्म-क़िस्मके, विविध बोलियाँ, दिनमें भी झिल्ली-स्वन
यहाँ आदमीको अचरजसे देख रहा है वन्य पशु-जगत्
और कहीं मनमें शायद यह दुहराता हो अश्व भी स्वगत
"कौन यहाँ जँगली है ?" हम जो सहस्रकोंके लिए जिलाते
या कि आप जो अणु-बमकी निर्माण-दौड़में हो मदमाते
यहाँ शिकार मना है, वर्ना हिंसक मानवसे कब बचते ?
गोली नहीं जानती भाषा, वर्ण, जातिके भेदक रिश्ते।

---

१. आसाममें जँगली जानवरोंका रक्षालय।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिल्लीके औद्योगिक मेलेमें

: १ :

औद्योगिक मेलेमें चीनी गणतंत्र स्टाल
सुन्दर था। किन्तु एक बात खटकी। विशाल—
माओकी भव्य प्रतिमा जो गोतमेश्वर-सी।
साम्यवादी देशोंमें विभूति-वन्दना ऐसी?

बोले मित्र एम० पी० नहीं गान्धीकी प्रतिमा
या ऐसा भव्य चित्र कोई भी मेलेमें?
मनमें तब मैंने यह सोचा: अच्छा ही हुआ।
'घट-घटमें रमते हैं स्वामी अकेलेमें!'

माओ यह हों विराट, अवलोकितेश्वरसे,
या शुचीन्द्र मन्दिरके हनूमान् जैसे,
बावनगज बखानी दिवसन-जिनेश्वरसे,
रोडेशिया द्वीपके क्लोसस महान् जैसे—

सुपरमैन कोई हो किसी भी वतनमें;
गान्धी भले ऐसे ही, मानवायतनमें!

: २ :

माओ बड़े अच्छे हैं, लेनिन भी होंगे
मादाम सूँग भली, स्तालिन भी होंगे।
कहीं आधे वर्षके दुरन्त दिन भी होंगे।
कल्प जैसे क्षण, गजाकार तृण भी होंगे!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम तो बढ़ेंगे निज सीमामें
प्राकृतिक साधनोंके सहारे,
चाहिए न कोई 'एड' या कि 'क्रेन' थामे—
हमको जो; चाहिए न व्योम-तारे !

कब तक यहाँ चीनी धान, चावल चलेगा ?
गन्दुम भी उक्राइनवाला चले कबतक ?
न डालर न रूबल न येन्-ब्लॉक चलेगा ?
देख परायी झूपरी मन मचले कबतक ?

प्रकृति हमारे यहाँ जड न निरात्म है ।
चैतन्यमयी । परा नहीं, वह आत्म है !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक सॉनेट

गाँजा-नीति

[किसी प्रादेशिक ऐसेम्बलीमें यह कहा गया कि सरकार गाँजेकी खेती करनेको अनुमति न दे, क्योंकि यह नैतिकताके विरुद्ध होगा। यह खबर पढ़कर—]

मत अफ़ीमकी या गाँजेकी खेती करना
बहे विदेशी मद्य, गले तक उसमें तिरना
नैतिकता अपनी है भारी कोमल, भाई,
होती है जो गंधमात्रसे वह हरजाई!

नीति हमारी बड़ी पुरातन इन्द्र शुद्ध जल पीते थे कब!
और यादवोंका क्यों नाश हुआ यह पढ़ो भागवत!
वेदोंमें भी सोमपानकी चर्चा कैसी? शान्तं पापम्!
वह तो सोम बड़ा आध्यात्मिक, उसकी बात नितान्त असंगत!

बड़ा विचित्र यहाँका नैतिक आलजाल है, ओ मदिराक्षी!
इसके लिए न लेना कोई ग्रन्थ-पुराण-कथा तुम साक्षी!
आज कहींपर नशा बन्द है, कहीं पुलिसकी बनती चाँदी
लटकी तस्वीरें नारोंमें बादशाहके बदले गाँधी!

एक प्रदेश स्वयम् शासन मदिराका उत्पादन-क्रय करता
और दूसरेमें 'बीअर' की दुगनी खपत बढ़ाती चिन्ता!

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'पॉवर करप्ट्स'

'प्रभुता पाइ काहु मद नाहीं'
बोल गये तुलसी गोसाँई
और रॉबटने यही कहा था
अधिक भ्रष्टता, अधिका सत्ता !

सुनता हूँ प्रतिदिन हैं होते
सत्ता प्राप्त गुटोंमें झगड़े
बीज बबूल-फूटका बोते
कैसे अमन-आम हों तगड़े !

इसी लिए ओ मेरे साथी
मित्र पुराने भले कभीके,
अब जबसे तुम हो (सह) मन्त्री।
'नहीं तुम्हें मिलता'—सब झीखें !

कुर्सी जब तुमको दे बुत्ता
तब मिलने आना अलबत्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निदान

सुनते हैं कलजुगमें महिमा बड़ी दानकी
अगर कहीं आपने ज़रा-सी तुक-तान की
रेडियोमें होता है 'काण्ट्रैक्ट-दान'; और
एम० ए० में 'गोदान' 'टेक्स्ट' है।

(विनोबाका भूदान विश्रुत है विश्वमें)
'किन्तु यह सूदान सुसरा कहाँ है जो !'
पूछा एक भूगोल-छात्रने।

ज्ञान-दान, पानदान, फूलदान, मूलदान,
ब्याजदान, खानदान, पीकदान, चूल-दान,
मतिदान, गतिदान, प्रतिदान, यति-दान
सुना है सतीत्व-दान और सम्पत्ति-दान....

दानका ये रोग अगर ऐसा ही बढ़ा तो,
बोलो कहाँ है निदान ?
क्या निदान है,
निदान....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लघ्वारण्योपनिषद्

नाते-रिश्ते
सभी खोखले। मिट जाते हैं आँखें मिचते।
प्रेमाराधन
केवल निज महत्त्ववर्धनके साधन!
मत-विश्वास, 'ईडियालौजी'
अपने?
सपने। केवल सपने.....
न वा स्लोगनस्य कामाय स्लोगनं प्रियं भवति
न वा राजकीयपक्षस्य कामाय पक्षं प्रियं भवति
—आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्यू डिटरमिनिज्म

'भाव' तुम्हारे, भाषा मेरी
इच्छा तेरी, आशा मेरी
चोरी-चोरी हेरा-फेरी

क्या रखा है तेरा-मेरा
जिसने हेरा वही अँधेरा
'सोडा, वैरा !'—यह चकफेरा !

कहीं दर्द है कहीं निठुरता
होरी जाड़ा खाय ठिठुरता
मरता, शबनम जैसा दुरता

'गोबर बँगला-मोटर हाँके
दुनियाको फाकेके-फाके !
(जा मुँह धो कर आ बे, बाँके !)

जीवनकी व्यत्यस्त-पहेली
पढ़े फ़ारसी भोजवा तेली
बेच रही गुरुको गुड़ चेली

ग़लत शब्द है जगन्नियन्ता
कहाँ अजन्ता, कहाँ अहन्ता
सत्ता ही पे-स्केल नियन्ता !

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवीन रीति-काल

: १ :

भूषणसे क्षमा माँग कर

चीनियोंसे काऊ-टाऊ, लाई जो सयामी म्याऊँ
तिब्बतके झोटको वा-मुहब्बत नज़र की।
टोकियोसे आये उन्हें 'किमोनो' दिखायें और
गर्मियोंमें फ़िक्र रखी बर्मियोंके सरकी।
बालोको दी बाली और जावाको सजावा दिया
सिंहलकी काफ़ी कप सिंगल उधरकी।
मलयको मलय-बतास दी 'सुमात्रा'में
दिल्ली दुलहन भई एशियाई घरकी।

: २ :

पदमाकरसे क्षमा माँग कर

गुलगुला गलीचा है, गद्दा है, गुनीजन हैं, 'माइक' है,
महिला, मीडियाकर कविमाला हैं।
कहैं पदमाकर मिठाई है, 'मिक्शचर' है, शरबत है
सिगरट है, केतली है, प्याला है।
शिशिरके पालाको न व्यापत कसाला तिन्हें
जिनके अधीन ऐसे काव्य (?) को मसाला है।
तान तुकताला है, बिनोदके रसाला है,
गला बहुत भोंड़ा पै 'गीत' लिख डाला है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: ३ :

गोपाल मिश्रसे क्षमा माँग कर

पूरब

पानी लगि जात बहु फूलि जात गात
पुनि पेट चलि जात कछु खाई जात जब हूँ।
सुनते हैं कामरूप देसमें अनूप पसु-पच्छी करि
राखै नारी नरनको अब हूँ।
स्टीमर ते रेल पुनि रेल छाँडि स्टीमर पै बस है कि
बस-बस कहते हैं सब हूँ।
'लिंक' ये असामको थकाती बहु भाँती याते जैये नं
गुपाल दिसि पूरबको कब हूँ।

दक्षिण

रुंडु-गुंडु बोली नहीं समझ ठठोली,
मुंडु-तुंडु वस्त्रधारी, कहीं देह भी उघारी है।
इडली औ दोसा कहीं काफी पर पोसा यह उदर,
परोसा बस चावल तीन वारी है।
'अट्टम्' औ 'पाडुम्' के अलिरेप्पु-नाटयम् के,
कथकली शौक़वाले नर और नारी हैं।
बढ़त अगारी होति बड़ी-बड़ी ख्वारी,
दिसि दक्षिण मझारी जात होत दुख भारी है।

पश्चिम

बम्बई सनेमा-घर मार धूर-धक्काको
इश्क़ और मस्केमें ही दिवस विताये हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिजलीकी गाड़ी है, प्लास्टिकको साड़ी है,
पानी विन मछली-सी रातें हैं, शामें हैं।
साहबीयत कूट-कूट, टाई, 'थ्री-पीस' सूट,
पहरत ग्रीषममें ऊननके जामे हैं।
सुकवि गुपाल कछु कहत न आवे जात,
जेते दुख होत सदा पच्छिम दिसामें हैं।

उत्तर

लस्सीके गिलास साड़ु नाल हैं बिलास सदा,
भंग या अफ़ीमं मधुशालासे नशामें हैं।
भड़कीले कपड़े व राहमें खड़े-खड़े चाट खात,
ऊपरसे मीठे, नहीं दिलकी बतावै हैं।
सुकवि गुपाल सदा सीत-भयभीत लोग,
बरफके मारे दुरे रहत गुफ़ामें हैं।
राहमें न ट्रामें, चल्यो जात ना बसोंमें,
याते बहु यामें जात उत्तर दिसामें है।

: ४ :

बेनी कविसे क्षमा माँगकर

आध-पाव तेलमें तयारी भई रौशनीकी
आध-पाव काग़ज़ पै रौशनी है थिरकी।
आध-पाव दिलका है दर्द और शब्दोंमें
माँगि-माँगि लायो हैं परायी चीज़ घरकी।
आधी-आधी जोड़ी कुछ पंक्तियाँ छपवायीं निज खर्चसे
दोस्तोंमें बाँटी जो है अरबी न तुरकी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहे कवि 'किंचित्' कजाक कविताई भई,
शामत है पाठककी और कम्पोज़ीटरकी।

: ५ :

श्रीमतीको केशलंब-तैल जहाँ चाहिए तो
मिस्टरकी चाँदपर एक लट पायी ना।
श्रीमतीको हॉलीउड-लन्दन पसन्द बहुत
मिस्टरको भाते हैं रूस और चाईना।
श्रीमती पै मिस्टर सदा ही शक करते हैं,
मिस्टरको देती हैं श्रीमती उलाहना।
जाकी यहाँ चाहना है ताकी वहाँ चाह ना है
जाकी यहाँ चाह ना है ताकी वहाँ चाहना।

: ६ :

सीस पै नाइट-कैप विशाल,
विलोचन लाल, तिरीछी-सी भौंहैं।
साइकिल-लैम्प बिना चलि जात कि होठ पै
सीटी सिने-गीत सोहैं।
तिरियानको बारहिं बार चितै,
कभूँ मोको जो घूरत या कभूँ तौहै।
पूँछति ग्राम-वधू तिय सौं कहो
साँवरो सो यह 'लोफ़र' को है?

●

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाज़ारू सभ्यता

बड़े-बड़े बाज़ार जहाँपर सजा-सजाकर
कपड़े, गहने, जूते, सब कुछ हैं विज्ञापित,
मोटरके शो-रूम, विलायत-लौटे नापित,
वहाँ सभ्यता छिप जा बैठी कहीं लजाकर।

कार रोड, औ' बिजलीकी सब सुविधा अच्छी,
रिक्शा, टैक्सी, ट्राम और बस
पैसेसे मिलता है बस सरबसका सब रस
पर दो जून वहीं खानेकी दुविधा अच्छी!

यहाँ अमूल्य वस्तुएँ भी बेंची जाती हैं :
मसलन सतीत्व, प्रामाणिकता, वोटर-संख्या,
पण्य वस्तु लावण्य बना है, नगण्य है क्या ?
खुदा चढ़ा नीलाम, आत्माकी फ़ोटू खींची जाती है

नहीं यहाँपर कुछ भी शाश्वत या चिरकालिक।
सब कुछ बँटा हुआ दो रिश्तोंमें : हैं नौकर अथवा मालिक!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दरद न जाणे कोय

फिर वर्षा, फिर ऊमस, धरतीका वक्षस्थल पुर कीचड़से
चन्दन लेप नहीं, दुर्गन्धित सड़कें, गटर जलाशय मिलते !
यही ज़िन्दगी ! कितनी मजबूरीका कर्दम ! पंकज खिलते
चढ़ते हैं हम गिर पड़ते ! कभी सिकुड़ते, कभी उमड़ते !

पुनरावृत्ति यहाँ होती है, वही सुबह है, वही शाम है,
नहीं बनारस—अवध, पार्क, बेंचें, वे ही हैं खोंचेवाले
मुहरे वही, वही खाने हैं, गिनती वही, वही हैं चालें।
(क्षण-क्षण नवता जो देती है, सुन्दरताका 'रूप' नाम है)

फिर भी कोई बात हो गयी, आज नहीं ऊमस अब ऊमस
आज नहीं 'पर्वत-स्तन-मण्डल', आज नहीं पावसमें वह रस
आज अकारण लगता मनका कहीं पंगु है सारा साहस
कारण-हीन दर्दसे एकाकी सारस अनाम है बे-बस !

डूब गयी द्वारिका बाढ़में, छान रहा है रेत सुदामा
बैद सँवलिया खोज रहा है इसी दर्दका गुम सरनामा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दशक [का अनुभव]

एक तुम्हारा मुझे भरोसा
चाहे तुमने सदैव कोसा
प्रत्यय इतना पाला-पोसा
पर तुमने भी जब ठुकराया
ब्रह्म मान लेता हूँ माया
नास्तिकने पत्थर ही पाया

पर जो मान रहे थे ईश्वर
वे भी हुए नहीं अविनश्वर
उनकी श्रद्धा मीन-बद्ध शर !
नहीं स्वयं-वधु न ही स्वयं-वर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोनेका हिरन

सुन्दरीके पैरोंमें देखी जब सोनहली
नरम बाल वाली और गोल श्वेत चत्तोंकी
चप्पल, तो देख उसे याद आयी हिरनोंकी
खुले चरागाहोंमें चौकड़ियाँ पहली !

याद मुझे आया भूत, वर्तमान, भावी,
याद नहीं आयी मुझे किसी भगवान्‌की,
याद मुझे आयी सिर्फ़ भगवती जानकी
मारीच आया बन हेम-हिरन मायावी ।

आज भी 'सु-वर्ण' हमें-तुम्हें ललचाता है
आज भी हमारी देवियोंको वही कंचुकी
पहननेकी इच्छा है। किन्तु वह वन चुकी !
आज राम शरासन ले वनमें कहाँ जाता है ?

लक्ष्मणकी रेखा खुद लक्ष्मण मिटाता है ।
खुशी-खुशी सीता संग रावण मुस्काता है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गाथासप्तशती

हल्दीसे पियराये गदराये अंग
खेतोंमें गोरीके मनमें उमंग
सोचती है कटने पै अरहरका खेत
प्रियसे मिलनका म कोई संकेत
खन्ना बनाती ग़रीबिन निपट,
हाथोंसे की दूर बालोंकी लट
कहीं लग गयी हाय, चूल्हेकी राख
बोला धनी : ये हैं मुखका शशांक!
कहाँ वे 'मनोरथगर्भिणियाँ,'
कहाँ उनका'हरितदीर्घ रहस्यमार्ग',
प्राकृत वह 'चौर्यरत गोपनियाँ,'
जानते नहीं, हम लिखते हैं प्रेम–morgue
नहीं 'हाल' हम, नहीं हाल पुरसाँ
गाथा क्या गायें ग़रीबी है सुरसा!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फगुनाहट

सरसोंके हाथ हुए पीले
ईखोंकी पाँत खड़ी तनकर
अरहरके खेत बड़े भोले
सूरज भी ठिठका है छन-भर

बेर छिपे झाड़ीसे झाँके
चरखीसे पानी बहता है
निकली गोरी अभी नहाके
फागुनकी आहट अनचाहे

पेड़ोंने बदले हैं कपड़े
उड़ते सूखे पोपल पत्ते
जाटिनके दाँतीसे काटे
पूल किये पच्चीस इकट्ठे

नभसे सौ फ़ानूस टँग गये
पच्छिमकी महराब ललाई
नये-पुराने धुले, रँग गये
मनमें यों बहार उरझायी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो नमूने

श्री किरशनजीकी चिट्ठी मिसेज़ राधाके नाम

(१)

मथुराजी

आज प्रिये, जन्माष्टमी, कृष्ण-स्मरणका अन्ह
मेरा नाम रखा वही, माता ! वालिद !! धन्य !!!
वह जनमे थे जेल में; 'ए', 'बी', 'सी' था क्लास ?
हम जनमे । कुछ भी नहीं हुआ आस या पास ॥
भगवदनुग्रहसे बने, सोलहवीं सन्तान
कौन पूछता फिर हमें, बढ़े, हुआ कुछ ज्ञान—
चोरी करना सीखते, माखन नहीं सही, आम
सार्थक यों करने लगे, हम भी तेरा नाम ॥
नहीं दूध था ना सही, कुल्हडमें पी चाय—
और बड़े होकर लड़े, वह भी बस निरुपाय !
एक हमारे स्कूलमें, मास्टर थे भद-रंग
नाम कालिया था, किया उनको हमने तंग ।
अब आगेकी बातका पूछो मत आनन्द ।
पढ लो चाहे भागवत, उसमें दशमस्कन्ध ॥

(२) जवाब

वृंदाबन

जोग लिखी जैकिसनजी बाबूको परनाम,
सधिया गुजरी हो गयी जेहि कारन बदनाम ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहाँ कन्हैया देवता, अब तो कोरा नाम !
उनकी नखकी छाँह भी तुममें नहीं हराम—
अबके लेखक बहुत-सा कूड़ा लिखते जायँ :
कहते हैं इन्सानको समझो ईश्वर, हाय !
पर कैसे हम मान लें बदमासोंकी बात
झूठोंका विस्वास क्या ? ये सारे बदजात !
हिम्मत थी श्री कृष्णमें रचता था वह रास।
यहाँ आजकल खुदकुशी, मजनूँपन, उपवास···
इनकी ही बस धूम है, रोते हिया उघेड़
लड़की मनचाही नहीं मिली, हुए कॉमरेड।
राधा ऐसे मूर्खकी, बनेगी न पद-रेणु
[बजा रहे हैं सेठजी, किसनचन्द जो वेणु !]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नींव

कुछ सिलावट, छीनियाँ ले,
ईंट रचते हुए मिस्त्री,
कुछ श्रमी महिला तगारी ढो रही
गोल चूनेकी इक भट्ठी !...
बन रहीं थे कोठियाँ, ये महल किसके ?
आदमीको शीत ऊष्मासे फ़क़त रक्षण अभीप्सित
फिर भला महराबकी और मंज़िलोंकी क्या ज़रूरत ?
ये भला बहलाव किसके, शग़ल किसके ?—
ईंट रक्खी, और चूनेसे सटायी
धूपसे पक्की हुई
अब क्या हटायी जा सकेगी ?
और ऊपर पत्थरोंको पाट डाला
अब भला ये चीज़ किस 'बल'से
मिटायी जा सकेगी ?
(एक बल है तो ज़रूर, भूकम्प जिसको बोलते हैं
जो कि सारे विश्वको संत्रस्त कर दे
'शेष' जब कुछ डोलते, मुँह खोलते हैं....)—
आज जितना ही शिखर ऊँचा बनाना
ख़ूब गहरा खोदना उतना ज़रूरी
और जितना ही बड़ा मालिक-मकान
उतनी ही ज़्यादह मजूरीसे हों दूरी !—
यह जुटे हैंगे अनेकों ज़ीव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिनको एक टूटी झोंपड़ी भी न नसीब
क्या इसीको लोग कहते हैंगे नींव ?
क्या इसीपर आज होंगे रे खड़े
प्रासाद ये, अट्टालिकाएँ !
और उन विवसन, श्रमिक महिलाजनोंकी
आहपर जो चाँदनी बनती चलेगी
क्या उसीपर खिलखिलायेंगी
वे 'बूर्ज्वा' बालिकाएँ—?
जो हमारे कविजनोंकी स्वप्न प्रेयसियाँ बनेंगी !
क्या इसीको लोग कहते हैंगे नींव ?
क्या इसीपर ये जुटे हैं जीव ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डरू संस्कृति

जो कुछ करना भाई वह सब करना, लेकिन डरते-डरते !
जीना हो तो डरते-डरते, मरना लेकिन डरते-डरते !
प्रेम करो तो चोरी-छुप्के, देख फूँककर दाँये-बाँये,
स्त्रीसे रति भी डरते-डरते (कहीं न आबादी बढ़ जाये)
दफ़्तरमें अफ़सरसे डरते, साहस कहीं भी न दिखलाओ
गाड़ीमें ड्राइवरसे डरते, चिकनी-चुपड़ी गाते जाओ !
कहीं तुम्हारे मित्र उभरते, कहीं तुम्हारे पुत्र उभरते,
हो तो उनकी सभी उमंगोंपर डालो तुम पानी ठण्डा
ध्यान रखो मुर्ग़ी बन पाये कहीं न यह इच्छाका अण्डा !
कोई मिले अपरिचित चाहे, कर जोड़ो, जोड़ो दो बाहें !
सभी धर्म हैं प्यारे रस्ते, नेता हैं साक्षात् फ़रिश्ते ।
दीवारोंपर टाँगो भैया, गाँधी, शिवजी और सुरैया
एक साथ ही एक पाँतमें, तसवीरोंको करो नमस्ते !
साँसें लो डॉक्टरसे डरके, रोटी लो बेकरसे डरके !!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्पादक

कुर्सीपर बैठे हैं मोटी-सी तोंद लिये,
मोटी-सी बुद्धि और मोटी-सी ऐनक है।
टेबुलके नीचे है 'वेस्ट पेपर बास्केट'
दिमाग़पर 'प्रेशर' है 'अमुक-नीति' अवलंबन।
महीने-दर-महीने तनख्वाह है छन-छन-छन
चाहे जिसकी कर दो निन्दा अथवा स्तुति
चाहे जिसे कहो प्रगति अथवा कहो अधोगति।
सम्पादकको क्या काम ?
सिर्फ़ आराम।
दस-पाँच चिट्ठी लिखीं, दो-चार अखबार टटोले
और मासिकके लिए नोट्स लिक्खे जो,
जानता है वो'
वे न पढ़ते हैं कोई भी पाठकगन
माहवार तनख्वाह—कलदार छन-छन-छन
कभी कर आये 'टूर'
किसीको कहा 'हुजूर'
और कुछ पैसे और फ़ोटो भी उठाये कहीं,
बोले वो पूँजीपति—फ़लाँ-फ़लाँका विरोध—
कर दो, बस चली क़लम
यही है हमारे प्रिय सम्पादकजीका विनोद
नयी-नयी गालियाँ
बनायीं और पायीं कहीं तालियाँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत हुआ भर पाये
कभी हुए बहुत क्रुद्ध
कभी माँग ली क्षमा कि चुपचाप
बाहरे मृदङ्ग छाप
हिन्दीके मासिकके सम्पादक
जब कि सह-सम्पादक
खपाता है रात-दिन दिमाग़, बन
पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर

ये नर
सब श्रेय स्वयं लेते हैं।
विशेषांक दो-चार, सम्मतियाँ ढेर-ढेर
मिलनेमें क्या देर ?
बन गये गलीके शेर
खूब भूँक भूँके, पर
हाथी है चला ही जाय, अपनी गति सों न डिगाय !
राम-राम—
ऐसी जीविका हराम !!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरस्वतीके ग्राहक

"शेलेकी पढ़ ली क्या तुमने 'लव्ज़ फ़िलासफ़ी' ? 'नहीं; ड्राइ हो"
"क्यों साहब, यह नै कुछ जँचता, 'गर्ल्स' हों और ये न 'शाइ' हों"।
"बस जनाब थोरुपका 'फ़्यूचर' बहुत 'डार्क' है"
"मेरे दो ट्रंप्स", "आज पढ़ाना 'स्काइलार्क' है"
"बार्बरा, सिलेरंट, डेरिआई, फ़ेरियो' 'हेलसिलासी"
"रागात्मिका वृत्ति कविता है" "सम्वत सोलहसौ उन्यासी"
"कॉसथीटा प्लस साइनथीटा" "क्या समझे हैं आप मुझे जी"
"हाँ केम्ब्रिजमें पाँच वरस तक पढ़ा हुआ हूँ मैं अँग्रेज़ी"
"शटप","हमारे वक़्त न होते थे इतने शातिर ये लड़के"
"परमेश्वर है ? क्या कहते हैं ?" "मैं जाता हूँ वॉकिंग तड़के"
ये दोपाये, तोते, थर्मामीटर हैं ये दिमाग़-नापक
यह आवाज़ें किनकी हैं ? जो हैं आचार्य और अध्यापक
सूटबूटमें बिलकुल 'अल्ट्रा-मॉडर्न', चश्मा और गंजे सर,
सरस्वती देवीके गाहक ये प्रोफ़ेसर !!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कॉलेजका बोर्डिङ्

"कहते हैं कविता लिखना ही है पागलपन।"
"होगा" "वैसे एक विराट् मूर्खता = जीवन।"
"कहते हैं, जीवनकी बातें जीवन जाने"
"तुम क्यों दुनियाके अन्देशेमें दुबले हो?"
"बात तो कही, यार बराबर सोलह आने—"
"हाँ, आलूकी चाट! मटर भी कुछ उबले हों"
"तिसपर इककप चाय? वाह फिर क्या कहना है?"
चुगते गये और फिर तिसपर चहचहना है
'इस काँग्रेसकी ऐसी-तैसी" "उस टीचरका ब्याह हुआ है"
"फ्राइड तो कहते हैं ऐसा" "मेरा इक्का शाह हुआ है।"
"खी खी खी खी खी खी खी खी" दिन औ रात यही ही चलता है।
यह कॉलेजका बोर्डिङ् है और इससे जग भी जलता है।
यह आवाजें इतनी सारी किनकी हैं? वे पाणी-अर्घी
सरस्वती देवीके चाहक, ये विद्यार्थी!!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क़िता और एक रुबाई

क़िता अर्ज़ है

मैं 'माइक' के सम्मुख हूँ, 'माइक' मेरे सम्मुख है।
कोई सुनता भी होगा या नहीं इसीका दुख है।

और एक रुबाई—

कविताएँ लिखीं उसने सिरफ़ नामके लिए
वे हो गयीं खुशामदें हुक्कामके लिए
होते थे कभी शब्द किसी 'अर्थ' से भरे
अब रह गये हैं शब्द फ़क़त दामके लिए !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन कविताएँ

१

आप एक भूतपूर्व क्रान्तिकारी हैं
आजकल क्या करते हैं ?
जानते हैं देशमें घोर बेकारी है
उप-मन्त्रीजीका हुक्का भरते हैं !

और आप ? एक भूतपूर्व पुलीसके अफ़सर हैं
आजकल क्या आपका है व्यवसाय ?
देशभक्तिके लिए आपको मिली जागीर है।
योग-साधनामें अब लगे आप निरुपाय !

२

"यही हमारी जनता—मेरा विषय"
"और है मेरा आशय कहनेका अब यही महाशय....."
"मैंने अपना स्वयम् प्रकाशन भी खोला है,"
"उधर एक बमभोला मानिकतोलामें रहता बोला है"
"मैं केवल प्रॉलेतैरियतपर लिखता हूँ,"
(वैसे थोड़ासा बैंक-बैलेन्स भी रखता हूँ)
नहीं ज़रा भी किसी राजनीतिक पार्टीमें
मगर सर्वदर्शनपर एक ऑथॉरिटी मैं !
मैं सर्वज्ञ और मैं ही हूँ युगनिर्माता भी
मुझे नहीं ज़रा भी यह क्षणवाद अरे भाता भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुटबन्दी है, गुटबन्दी है कहकर सबको चुप कर दूँगा
और साँपके बदले मैं लाठी पीटूँगा
हो अखबार हाथमें फिर क्या और चाहिए ओ नादानो !
मैं तो बन ही जाऊँगा लेखक—मानो अथवा मत मानो

३

कालिदासके बाद देश भारतमें
कवि 'किंचित' का नम्बर
ठीक उस तरह जैसे आता है क्रमगतिमें
कभी नवम्बर कभी दिसम्बर
अब तो फ़िल्मस्टार जगजेता
कभी रहे चंगेज़, सिकन्दर
नहीं जानते सतयुग द्वापर त्रेतामें क्या थे ये नेता !
कलिमें मानव बन्दर !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरापाईगुडीका लामा

मिले ठुलो लामासे। शिशु-सः हँसा। हमें दी लेमनजूस। कहा, 'सु-स्वागत'!
बोले मेरे साथी दुभाषिए—'रे-मो' (या चित्रकार) हैं। स्तिमित, भयचकित,
'रे-मो ?' वह फिर हँसा। मूर्ति-सा बैठा। छबि आँकी जो विस्मित,
देखा, बोला—'एक चित्र बुद्धका बना देंगे ?' फिर वह स्मित !

सहर्ष पूजागृहमें हमको लिवा गया। थे मन्त्रपाठरत
कई भिक्खुजन, प्रसाद, घण्टे, दीये औ कंजूर सुरक्षित।

लौट रहे तब देखा बाहर, युवक भिक्खु जिज्ञासु भावसे,
चीनी भाषामें पढ़ता था कोई रूसी चित्र-पत्रिका।
अभी नहीं टकराया साहिल इस भोली बह-रही नावसे
धरा रहेगा यह शिशुवत् स्मित, लेमनजूस व चित्र-मातृका
मैंने मनमें कहा—तुम्हारी 'मुक्ति' अभी होनी है बाक़ी
तार कँटीले, बम, टैंकोंके काले धब्बे, खाकी, खाकी....
जब यह माला, छीन तुम्हें देंगे वे बन्दूक़ नुकीली
(शान्ति-सुरक्षा !) चीवरके बदलेमें वर्दी लाल व पीली !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बम्बई

एक आधी-ढँकी 'कातल'
एक नीला अर्धवर्तुल
फेनके मसले किनारे
बम्बई

भेल-पूरी, कटे नरियल हरे
काग़ज़ोंके कई टुकड़े हृदय पथरे
रेतमें दो बुत उदासन
हवामें नेतई आश्वास—न
बम्बई

ताज, फुटपाथों कई मुँहताज
हिल मलबारकी, कुहरों घिरी
मिल रेशमी धूँआ-उगलती चार्ली
भूख अँतड़ीमें सुलगती वारली
आदमी ज्यों छू गयी बिजली अशेष
निरन्तर भागदौड़, अन्धेरी रेस
बम्बई

लक्ष्मी जाकी महा
कच्छपी खरहा यहाँ
रानी नहीं है बाग़में
ई-राणी कडक पेश्शल चहा !
लोकल बस दहा-दहा
बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठाना नहीं है दूर है हर क़दमपर
फ़िल्में यहाँ ढलतीं क़लमपर !
राजनीतिक जोश जैसे बैटरी
स्पीच सोडा-वाटरी !
बम्बई

मारवाड़ी, पारसी, घाटी, गोवानी,
सूरतें कितनी यहाँ बेजान बेपहचानी
यहूदी, बहूदी, न रेखा लहू-दी
कुछ फफूँदी लिये शक्लें हैं बेहूदी
बम्बई

जहाज़ोंको इन्तज़ारी पिलाते
नज़रोंके रूमाल हिलते-हिलाते
कहींका मरुस्थल सजलसे मिलाते
कहीं स्लम मकोड़ों-से कुछ बिलबिलाते
बम्बई

कहीं क्लब, कहीं पब,
कहीं फब रही ढब
कहीं नभ निरा नभ
कहीं तंग गलियाँ न किरनें, न सौरभ
कहीं दैनिकोंमें छिपा दर्द है सब
बम्बई
बन भई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरकसके जोकरका वक्तव्य

मुझसे कहा गया है हँसो,
हँसी न आती हो तो चेहरे पर बत्तीसी-खिलती नक़ाब पहन !
(मेरे मनका दर्द किसीको क्योंकर कहना
केवल सहना, केवल सहना !)
सदा चुटकुले कहो, फ़बतियाँ कसो
हँसाते रहो, पेटके लिए, वहींसे तनखा मिलती.
कह ना सकना !
(बाहर ऊल-जलूल कथन केवल बकना
मनका मनमें रखना !)
—यही साहित्य, आजकी कला,
विवशता, निरी विवशता
जीना-मरना, यही अधूरा
आधी मनु-ता आधो पशुता !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लॉलीपॉप

एक बार हिन्दीके छह कवि सरस्वती देवीके पास पहुँचे और आशीर्वाद माँगने लगे। सरस्वतीजीने उन्हें एक-एकको एक-एक लॉलीपॉप यानी चूसनेके खटमीठे पेपरमेण्ट दिये। तब उसकी तारीफ़में उन्होंने जो कुछ फ़रमाया सुनिये।

एक पुराने ढर्रेके कवि थे उन्होंने कवित्त कह डाला—

कैधों निबुओंका है निचोड़ इक्षुदण्ड जोड़,
कैधों किसी लाल-पीले राजर्षिका शाप है।
कैधों यह खट-मीठी स्मृतिकी अँगीठीमें
मुग्धा नायिकाके मन छाया हुआ ताप है।
कैधों अनुरागका है सुरभिविहीन पुष्प,
बापरे बाप! आप कैधों स्मर-चाप है।
प्रतिभाका पाका यह, ज्ञानकी शलाका सम
मातु सारदाका यह बाँका लॉलीपॉप है।

एक द्विवेदीयुगीन कविने हरिगीतिका फरमायी :

भगवान् भारतवर्षमें कैसा विदेशी शाप है!
शब्द कोई क्या स्वदेशी मिल न सकता आप है!
किन्तु माता शारदाने जो दिया, निष्पाप है!
आह! लॉलीपॉप है! रे वाह, लॉलीपॉप है!

बादमें एक छायावादी कवि पधारे। बोले—
अरे अवदात! लालिके पाप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राण ! तुम लघु-लघु गात
पियालोंके फूलोंसे
जब अलिकुल-संकुल
टलमल-रलमल
मसृण-अविरल
जल बहता था जलज-नयन कूलोंमें
तब तुमने जन्म लिया ओ शबनमस्नात !
मधुर मधुर तुम ! विरह-स्मरण सम
अमित आत्म तुम, करुण करुण मम
तुम्हें सँजोकर मैं रखता हूँ प्रिये स्नेहकी याद !
चम्पल भी जो तुमसे पायी, समझा सदा प्रसाद !

प्रगतिवादी—

लाल लॉलीपॉप देना !
शारदे ! तुम बोर्जुआ हो, एक हँसिया छाप देना !
मुक्त मेरा छन्द है
यह मुक्त सब आनन्द है
स्यूतनिकका युग, मुझे मत लाइका का शाप देना !
लाल लॉलीपॉप देना !
चूसते हैं खून जैसे ग़रीबोंका, मजूरोंका
चूसते हैं नवीनोंको, पुराने ज्यों सभी पोंगा !
चूसते हैं, चूसते हैं, चूसते हैं
आज लॉलीपॉप हम !
उच्छिष्ट किन्हीं देशोंके विचारोंकी भाँफ हम !
आनेवाली क्रान्तिके हैं घोड़ोंकी टाप हम !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीतकार—

साँस-साँसमें पुकारता रहा कि स्वाद याद है।
अधरसे चढ़ा लिया न अमिय-विष प्रमाद है।
गगनमें मगन चढ़ी कि बदरिया अगाध है।
गुनगुना रहा पिया हुआ, हियाकी दाद है।
न अर्थ है न शब्द, नाद, नाद, सिर्फ़ नाद है।
एक रक्त कमल लॉलीपॉप चखूँ य' साध है!

प्रयोगवादी—

खट्टी जैसी डकार
मीठा ज्यों कुण्ठाका ज्वार
अन्धा युग, अन्धा जग, अन्धी गली, अन्धा लालटेन
ट्रेनमें खींची हुई चेन!
शब्द मत दो, न सही, मिठाई दो
तो तो ता ता ता ता तो तो
मैं क्या बच्चा हूँ
जो लॉलीपॉप माँगूँगा?
आ गया चुपकेसे चोरीसे खा लूँगा!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलाकार

कलके वादे आज साफ़ हैं ! (कलाकार हैं !)
लाख खून भी इन्हें माफ़ हैं ! (कलाकार हैं !)
मुँह लटकाये क्यों बैठे हैं ! (कलाकार हैं !)
मुँह यों बाये क्यों ऐंठे हैं ! (कलाकार हैं !)
बाल बढ़ाये लम्बे-लम्बे, शॉल पहन ली ढीली-ढाली,
शाम घूमकर 'बारहखम्भे' कभी मुफ़्तकी 'बीयर' ढाली ।
'आप कौन हैं ?' 'चित्रकार हैं,' 'मूर्तिकार हैं,' 'कवि या शायर !'
'लीक लीक चल निर्विकार हैं,' 'किसी कारके पंचर टायर !'
'बड़े बोर हैं !' 'इक सिगार है ?,' सब दर्दोंकी दवा प्यार है !'.....
'कलकत्तेका कॉलिज स्क्वायर !'.....'करते हैं ब्यूटी ऐडमायर !'...
'बात करेंगे आसमानकी, मुँहसे पीक उछाल पानकी'
'बात करें वेनिस, पैरिसकी, मुँहसे महक रही है विस्की !'
जिस मिट्टीमें ऊँगे-पनपे, उसकी किसे खबर है ? (कलाकार हैं !)
बड़े बूजुआ मान : बुद्धि, ईमान; कि तनते ज्यों कि रबर हैं !
(कलाकार हैं !)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक [यक्ष]—प्रश्न

कालिदास ! हमको बतलाओ ,
जितने लोग तुम्हारा नाम यहाँ लेते हैं
उनमें-से कितनोंने तुमको भला पढ़ा है ?
या कि गुना है ? या समझा है ?

किन्तु नाम लेनेके लिए
समझना क्या आवश्यक ही है ?
'अनामिका' हो सार्थवती तब
हमें नाम ही काफ़ी है ।

इसी नामके खातिर हमने
क्या-क्या नहीं किया इस जगमें ।
और एक तुम—यह भी नहीं लिख गये
कब और कहाँ भला जन्मे थे ? कहाँ पढ़े थे ?
कितनी पायी थीं उपाधियाँ ?
—दिलका दर्द लिख गये केवल मेघदूतमें !
(हम तुमको लेकर सिर-दर्द किया करते हैं ।)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये पहरेदार

साहित्यके, संस्कृति-कलाके हम नये सरदार
चौकीदार–ठेकेदार
यह ज़रूरी कब कि हम ठुमरी–ध्रुपद जानें
कि कत्थक और कथकलि भेद पहचानें
नहीं यह भी ज़रूरी हम कभी सुर–ताल–लय मानें
मगर संगीत–उत्सव हो कि उद्घाटन बने त्यौहार।
हम सदा तैयार!

कि हम दुनियामें हर मञ्चमूँ पै भाषण झाड़ सकते हैं
कहीं भी हो ज़मीं थोड़ी कि तम्बू गाड़ सकते हैं
कि मजलिस, बज़्म हो कोई व उखाड़ सकते हैं
नसीहत डोज़ बस उपदेशके हम यों पिलाते हैं
क्षितिजको भी हिलाते हैं

यहाँ संस्कृति सिसकती हो बनी सीता मुसीबतमें
सदा सुविधापसन्दी ही रही आदर्श निज–रतमें
हमें बस वोट पाने हैं, न सूरतमें न सीरतमें
किसीमें भी हमें सौन्दर्यसे कोई कहीं मतलब
मगर पहरा हमारा ही रहेगा अब।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कविता और कम्पोजीटर

कविवर जी बोले मैंने हिंदीमें नया स्कूल है स्थापा।
,, ,, ,, ,, ,, रूल है ना ,, ॥
,, ,, ,, ,; क्रान्ति नयी कर दी है।
,, ,, ,, ,, भ्रान्ति ,, भ,, ,, ,, ॥

यह सब सुनकर कहा प्रकाशकने कुछ टेक्स्ट-वेक्स्ट भी होगी-?
,, ,, ,, सम्पादकने आँखें मूँदी ज्यों हों योगी ?
,, ,, ,, पाठकने यह कहा 'हीन-ग्रन्थिसे पीडित रोगी'
,, ,, ,, लेखककी पत्नीने केवल कहा कि 'छी छी !'

कविता लिख लाये फिर कविवर, और मित्रको चाय पिला दी
धुँआधार तब लेख छप गये, शत-शत आशीर्वाद मिल गये
सभी स्टेशनोंसे फिर गीत सभी सुरमें गाते सब 'शेदी'
कविजीको मुण्डन, मेले औ' व्याह-निमन्त्रण श्राद्ध मिल गये

कविने कवितामें दुहराना ऐसे शुरू किया जमं-जमकर
शब्द न लिखकर ,, (चिह्न) लिखे औ' धन्य हो गये कम्पोजीटर !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेगुनी पकौड़ियाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह आंग्लो-हिन्दिया

'काय्यालिय, कस्टोडियन इवैक्युई प्रॉपर्टी', 'साइकेट्रिक सेण्टर', '× × × को जनसंघ हेतु वोट दीजिए' 'उच्च कुक्कुट सहायक', 'उच्च मत्स्य पदाधिकारी', 'पात्र संवर्धन' (पाट कल्चर) 'इनकम टैक्स आफ़िस', 'गन्ना आयुक्त', 'लखनऊ, चाट हाउस', इत्यादि साइन-बोर्ड (सूचना-फलक या पट्ट जो भी कहें) एक ही शहरमें देखकर ज़रा अचरज होता है कि भाषाका हम क्या किये दे रहे हैं। उर्दू-हिन्दी कुछ शहरोंमें हिन्दू, मुस्लिम संस्कृतिके मेलकी तरह सदियों तक एकाकार हुई। और बादमें दोनों एक-दूसरेसे बिदा हुई बहुत गलेमें लग कर रोयी-धोयीं। पर अब बड़े हो गये, अलग घर बस गये। मगर इस बीचमें ही अँग्रेजी मेम साहिबा जो आ गयी थीं—उनका असर दोनोंपर-से कम न हुआ। सोचने लगे अँग्रेज़ीमें, बोलते रहे अवधी या बैसवाड़ी, भोजपुरी या राजस्थानी, और लिखें खड़ी बोलीमें। तो फिर पंचमेल भाषाका मज़ा पैदा न हो तो 'महदाश्चर्यमिदम्' और अब तो संस्कृत, संस्कृति, संस्कृतस्तान (इस तीसरे शब्दके लिए हमें क्षमा करें, यह हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्थानके वजनपर है।) का पुनः शोध, पुनरुद्धार, पुनःसम्भव, पुनरुत्थान, पुनर्जन्म, पुनर्विस्तारका नारा है। मगर वह सब 'वाया इंग्लिश' होगा।

—नागपुरमें एक फ़र्नीचरकी दूकान देखी थी। हिन्दी आग्रही दूकानदारने पटिया लगाया था—'अपस्कर कार्यालय।'

एक प्रदेशकी स्वीकृत हिन्दी शब्दावलीमें अंग्रेज़ीका यह पर्यायवाची है—Controller of Ports = बंदर-पाल।

—और दूसरे कोषमें लिखा है Technical Assistant = पारिभाषिक सहायक।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—और तीसरेमें देहातीकरणके जोशमें रेडियो स्टेशन = धुन बिखराव पड़ाव !

सबसे मज़ेकी बात यह है कि यह सब लोग गम्भीरतापूर्वक यही समझते हैं कि अपने ढंगसे सभी राष्ट्रभाषाका सचमुच बड़ा हित कर रहे हैं। वे देशकी भाषाका 'निर्माण' कर रहे हैं। देश तो बहुत बड़ा है—मैं इतना जानता हूँ कि रेलवेका स्टेशन मास्टर 'परिवाद-पुस्तक' और 'निष्क्रान्त संपत्ति कार्यालय'को अभी भी कंप्लेण्ट बुक और लेफ्टलगेज आफ़िस कहता है। और न तांगे-इक्के रिक्शेवाला 'संभरण और निपटान महानिदेशालय' आपको कभी सही-सही पहुँचा सकता। एक हिन्दीके उत्साही कह रहे थे—"दूरभाषपर आपका क्रमांक नहीं पाया। दूरभाषपुस्तक तो पटलपर ही थी।" "ज़रा अधिमण्ड-खण्डपर नवनीत लगाइए।"

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यूनियनके दो बकरे

सन् १९५५ में दशहरेमें हम टेहरी गढ़वालकी राजधानी नरेन्द्रनगरसे दूर पाँच मील पहाड़पर एक देवीके दर्शनके लिए गये थे। वहाँ टेहरी रियासतकी राजकुलकी 'माता' है। राह कठिन थी, थकते जाते थे। पाँव फूल गये थे। गेंदेके फूलोंकें वनकी 'उग्र' गन्ध आ रही थी। सुना कि इन फूलों-पेड़ोंसे शराब खींची जाती है। शक्तिके स्थानके आस-पास भंग, चरस, अफ़ीमके पेड़ोंके बहुतायतमें रोपणकी बात तो सुनी थी। तब ऊपर जाकर क्या देखा कि बड़ा बीभत्स-सा दृश्य है। एक वहीं 'इम्प्रोवाइज्ड्' मन्दिर जैसा बना लिया गया है। ताज़े खूनकी धार इधरसे उधर खिंची है। कई बकरोंके मुण्ड पड़े हैं और बलि दिये जा रहे हैं। लाल फूल, फूटे नारियल, बतासे, धूप-दीप, अगरु-लोहबान—अजीब-सा वातावरण है। मगर जब देवीके मन्दिरमें आये, तो यह सब देखने-सुननेके लिये तैयार होकर आना ही चाहिए। इतनेमें सुना यह कि दो-चार पहाड़ी मोटर-ड्राइवर आपसमें बात कर रहे थे—यूनियनके दो बकरे पहुँच गये या नहीं।

मुझे कुतूहल हुआ। पूछा, "यह यूनियन कौन-सी है?"

"बोले—मोटर-ड्राइवरोंकी। यूनियनकी ओरसे दो बकरे यहाँ कल ही से भेज दिये गये थे।"

मोटर-ड्राइवरोंकी देवीमाताके प्रति अपार भक्तिके विषयमें मुझे कुछ नहीं कहना है। वे दो जो उनके 'स्केपगोट' थे उनसे मुझे सहसा एक पुरानी बात याद आ गयी।

सन् १९३७ में मैं अहमदाबादके मिल-मज़दूर संघमें 'अप्रेण्टिस' के नाते काम करता था, तबकी वह बात है। मैं और द्रविड़ बड़ौदामें एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलकी स्ट्राइकको देखनेके लिए भेजे गये थे। 'अजापुत्रं बलिम् दद्यात् दैवो दुर्बलघातकः' अजापुत्रकी कोटिमें मैं था। वहाँ बात बकरोंकी नहीं थी, पर यूनियनकी ज़रूर थी। और आदमी वहाँ स्केपगोट बनाये जा रहे थे।

मिलमें ऐसा होता है कि मज़दूरोंको उकसानेवाले छुटभैये नेता अपने यूनियनके एक मेम्बर वीविङ् खातेमें, वारपीन खातेमें, स्पिनिङ् खातेमें ज़रूर ऐसे रखते हैं, जिन्हें जब मौक़ा आये, सिन्दूर लगा दिया जाये, गलेमें गेंदेके फूलोंकी माला चढ़ा दी जाये, और देवीको भेंट किया जा सके। सबसे पहले हड़तालका टेकनीक यह होता है कि सालीवाते (या स्पिनिङ्में जहाँ सूत-कताई होती है) में काम ठप्प किया जाये। जब सूत ही नहीं बुनेगा तो आगे बुनेंगे क्या? और जब बुनायी नहीं होगी तो रंगाई, खल चढ़ाना वग़ैरह तो आपसे-आप बन्द हो जायेंगे। यही हिसाब उस मिलमें भी था। मज़दूर यूनियनवाले लाल झण्डेके रोबमें थे। और बाहरके नेता अन्दरसे दो कामगार किसन और रणछोड़को उकसा रहे थे। बड़े जोशीले भाषण हो रहे थे।

मैंने पूछा, "ये दो ही क्यों चुने गये? अगर आपको हड़ताल ही करानी है, तो मुकम्मिल हड़ताल हो। सबकी राय ले ली जाये।"

गड़बड़ करनेवाले इतनी शान्ति और सब्रसे काम नहीं लेना चाहते थे। बोले, "वाह, ऐसा कहीं हुआ है? अब तो किसन और रणछोड़ राज़ी हो गये हैं। वे देशके शहीद हैं! शोषणके विरुद्ध, साम्राज्यशाहीके विरुद्ध, दुनियाकी तमाम पूँजीशाहीके विरुद्धमें दो हुतात्मा·····बोलो किसनकी जै!"

यूनियनके दो बकरोंके धड़से अलग गिरे खूनमें लथपथ ये कटे सिर देखकर मुझे सहसा कहाँकी पुरानी याद हो आयी?

अब देवियाँ बदल गयी हैं। मगर हमारी कट्टर श्रद्धा-भावनामें कहाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फ़र्क़ आया है ! कभी गोमाताके लिए, कभी हिन्दी-रक्षाके लिए, कभी भाषाके नामपर, कभी लिपिकी वेदीपर 'यूनियनके दो बकरे' चढ़ाये ही जा रहे हैं।

आदमी कब समझेगा कि वह बकरा नहीं है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईश्वर या/और बादल

सन् १९५६ में श्रीनगरसे लौट रहा था। बनिहाल पासपर पता चला, सामान लेकर जो लॉरी घूमकर आ रही थी, वह रास्तेमें फँस गयी। लैण्डस्लाइड हो गया था। अब पानी इतने ज़ोरोंसे बरस रहा था और एक छोटेसे टिनशेड-जैसे होटलमें पूरी बसकी सवारियाँ ठिठुरती खड़ी थीं। कहींसे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। पुलिस चौकी-वालेने फ़ोन किया। नीचेसे कोई जवाब ही नहीं आ रहा था। जान पड़ता था टेलीफ़ोनके तार भी राहमें टूट गये थे। गज़बकी आँधी और बर्फ़ीली हवा थी। ऐसे वक़्त कोई भी मिल जाये सुख-दुःख बतियानेमें साथी काम ही आते हैं।

यहीं मेरी उन मलयाली सज्जनसे मुलाक़ात हो गयी। नाम उन्होंने अपना मेनन या ऐसा ही कुछ बताया। बहरहाल वे कॅथॉलिक ईसाई थे। वे मिलिटरीमें काम करते थे। फौजी वर्दीमें थे।

बातें चलते-चलते मैंने उनसे सहज भावसे पूछा, "आपके देशमें लोग-बाग़ कॅथॉलिक भी होते हैं, और साथ-ही-साथ कम्युनिस्ट भी। यह कैसे एक साथ होता है?"

वह अधेड़ उम्रका भला आदमी शायद दोनों हो था। और कट्टर था—कॅथॉलिक कम्युनिस्ट केरलीय। बोला, "उसमें क्या कठिनाई है? धर्म तो व्यक्तिगत चीज़ है। घरमें हम कॅथॉलिक हैं, ईसाई हैं, या और भी कुछ हो सकते हैं। कम्युनिज़्म तो आर्थिक समस्याओंका समाधान है।"

मैंने नम्रतापूर्वक कहा, "वह केवल एक सुविधा या राजनैतिक टॅक्टिक्स नहीं है। वह तो एक पूरा जीवन-दर्शन है और....."

मेजर मेननने बात काटते हुए कहा, "इटलीमें लाई कॅथॉलिक हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो कम्युनिस्ट भी हैं। हमारे देशके कई लेखक बाहरके देशोंमें गये हैं और उन्होंने लिखा है कि रूस और चीनमें पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता है। जोज़ेफ मुण्डशेरी चीनसे लौटे हैं, और उन्होंने एक पुस्तक लिखी है; और पोट्टेकाट्टने मध्यपूर्वके विषयमें....."

मैंने फिर जिज्ञासा भावसे पूछा, "आपके देशमें अगर कम्युनिस्ट सरकार हो जाये तो कॅथॉलिक मिशनरियोंको और विदेशी मिशनरियोंको पूरी आज़ादी, धार्मिक प्रचारकी स्वतन्त्रता मिलेगी! जड़ और चेतनका रास्ता मनुष्य है या ईश्वरी पुत्र ?"

मेजर मेनन बोले, "क्यों नहीं ?" (आज पता नहीं मेजर मेनन कहाँ होंगे। वे मुझसे दोबारा मिलेंगे भी या नहीं, कह नहीं सकता।)

मुझसे रहा नहीं गया। मैंने कहा, "राज्यकी सुविधा और अदलते-बदलते धर्म-अधर्म छोड़ दीजिए। मैं कुछ 'फण्डामेण्टल' की बात करता हूँ। मसलन, यह घनघोर पानी बरस रहा है। ओले भी बरस रहे हैं। यह कौन बरसाता है—ईश्वर या बादल ?"

अब मेजर मेनन कुछ चिन्तामें पड़े जान पड़े। मगर वे उसमें-से भी रास्ता निकाल सके। बोले, "उससे क्या फ़र्क़ पड़ता है ? सवाल तो पानी बरसनेका है। कारण कुछ भी हो।"

मैंने कहा, "फिर सवाल तो पंचवार्षिक योजनाकी सफलताका है। पालघाटमें कम्युनिस्ट लोगोंने प्रदर्शनीमें इसे 'जनताका प्लान' कहा। फिर क्या फ़र्क़ पड़ता है कि इसे काँग्रेस चलाती है, या समाजवादी या कम्युनिस्ट ?"

मेजर मेनन बोले, "आप बेकार तर्क करते हैं। गरम चाय पीजिए। हमारे लिए दो नीतियाँ हैं : एक घरका, निजी प्राइवेट कोड ऑफ़ मारल है; एक पब्लिक या बाहरी नीति-शास्त्र है।"

मैंने मनमें कहा, "जब घरके अन्दर पानी बरसे (पत्नी या बच्चोंकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आँखोंसे बरसे) तो वह ईश्वर बरसाता है। बाहर जब बरसे तब वह बादल बरसाता है। जब कोसीमें बाढ़ आये या कश्मीरमें बाढ़ आये—ईश्वरी प्रकोप है। और जब बाँध (पैसा खानेसे रद्दी मैटीरियल लगानेसे) बह जाये, तो वह मानवी कार्य है !"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर्सन रोड सान्तीलाल

उस दिन कलकत्तेकी गन्दी नगरीके घृणित रास्ते, उसपर बहनेवाले कच्चे मटमैले गेहुएँ रंगके हुगलीके पानीके गटरमिश्रित प्रवाहको पीनेवाले फुटपाथोंपर सोये भिखारीके बच्चे, आँखोंमें दर्द पैदा करनेवाले सिनेमाके पोस्टर और वनस्पति घीके इश्तेहार सब देखते-देखते जा रहे थे कि एक संवाद कानमें पड़ा। यह वहाँके दो मारवाड़ियोंके बीचमें था। कलकत्तेकी मजा यह है कि वहाँ दो संस्कृतियाँ हैं—एक मारवाड़ी संस्कृति, एक बँगला संस्कृति। दोनों एक-दूसरेको कोसती हैं, दोनों सुविधाजीवी बनती जाती हैं। 'मारवाड़ी' एक-से अर्थ केवल राणा साँगा और निहालदे, मीराबाई और राणा प्रतापके राजस्थानके निवासीसे न लिया जाये—उस शब्दकी अभिधाकी रग-रगमें व्यापारके पसीनेकी बू है। यान्त्रिकताके साथ-साथ व्यापारिकता बढ़ती जाती है। उसका एक मूलमन्त्र है—सुविधा। आपकी सुविधाके ऐवजमें व्यापारीको मुनीफ़ेकी सुविधा, मुनाफ़े उसके ऐवजमें और बड़ी कोई सुविधा कभी-कभी ईमान, देशभक्ति, सौन्दर्य, स्वतन्त्र आदि मूल्योंको बेचनेकी सुविधा—यों सुविधाका गणित चक्र-व्याजसे, बढ़ता है। मूलधन छीजता है। मारवाड़ी मारवाड़का नहीं रहता। हमारे मित्र देवेशदासने अपनी बँगला कहानी पुस्तक 'रोमर्थके रमना' का हिन्दी अनुवाद 'मास्कोसे मारवाड़' व्यर्थ नहीं किया है।

तो अब हम सब मारवाड़ी शब्दके अच्छेसे-अच्छे और बुरेसे-बुरे अर्थसे सु-परिचित हैं। अब जो संवाद हमने सुना वह भी सुन लीजिए।

"अरे भायो, सान्तीलाल, ओ सान्तीलाल!"

"कओ रावबदासजी! जै जिनेन्द्र!"

"आजकल रहेवाणेको ठिकाणो कठे है? बासा कहाँको है?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अपने तो फस्टकिलास मौजमें हैं, भायाजी ?"

"दुकाणके नजीकमें मकाण मिल गयो हे के ?"

"आपको बासो कहाँ है ?"

"हाँ भायाजी ! अपणा तो ऐसा गुडलक लगा है कि बस कुछ मती पूछो।"

"बताओ भी ! चौरंगीमें कोई बिल्डिङ् दहेजमें मिल गयी क्या ?"

"ना—ना ! अपने तो हर्सन रोडके पिछवाड़े गलीमें दो रूम मिल गया है। क्या केणे हे। हर्सन रोडका हर्सन रोड और सान्तीकी सान्ती।"

"नाम माँ-बापने सान्तीलाल तो सोच-समझकर ही रखा है !"

इतनेमें बससे मुझे उतर जाना पड़ा और संवादका टुकड़ा उतना ही दिमाग़में रह गया। मारवाड़ियोंको और बातें कि कानमें हीरेको लौंगे पहनी थीं, या तोंदपर सोनेके बटनवाली लखनौआ चुन्नटदार फूलबूटेवाली सफ़ेद मलमलकी कमीज़ थी या टोपीके ऊपर रेशमी काम हो रहा था या नहीं यह सब मैं भूल गया। शेखावटीके मरुस्थलसे इसका नाना या दादा थाली-लोटा लेकर जब कम्पनी सरकारके 'परमनेंट सेटलमेंट' के देशमें यह पीली बेंटदार पगड़ीवाला पधारा होगा तब बेचारेको प्याज़की गन्ध भी असह्य थी। पर 'माछेर झोल' के देशमें यह ऐसे नाक दबाकर, कुण्डलिनी मारकर, गुंजलक डालकर बैठ गया कि अजगर भी शरमाये। और आज है कि उसके पडपोते फेरपो और लाइटहाऊसमें ऊनी थ्री पीस सूटमें हैं; लिमोज़ीनमें नज़र आते हैं, और 'रॉक एण्ड रोल' नाचते हैं नाइट-क्लबोंमें। यह इसी ज्ञानका उदय होते ही इसी बातका चमत्कार है कि उसने 'हर्सन रोड' या हैरिसिन रोडकी राह जो नाककी सीधसे पकड़ी तो मनमें उठनेवाले किन्तु-परन्तुको सुला दिया। 'ईज़ीकान्शन्स' का ही नाम है 'सान्तीको सान्ती'। बंगालके अकालके वक़्त चोरबाज़ारी, मुनाफ़ाखोरी की तो शान्तिपूर्वक और बुल्गानिनसाहबका स्वागत भी ठाठसे किया तो शान्त मनसे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सुविधा और शान्तिका राजपथ है।

दूसरी ओर हर क़दमपर दुविधा और अशान्ति है। बंगाली सुविधा-वादी और सुविधाजीवी हो नहीं पाता। उसे हर-क्षणपर अदृश्य उँगलियाँ राजा राममोहन राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और सुभाष बोसको टोकती हुई जान पड़ती हैं। बेचारेका हरिसन रोड या चौरंगी औरोंके हाथोंमें है। वह अपनी संस्कृतिके सुदामा-तन्दुल लिये शान्ति-निकेतनमें जा बैठा है।

मारवाड़ी शान्तिनाथका पुजारी है पर श्रमण-श्रावकके मार्ग उसके लिए भिन्न हैं। कभी बंगाली काली पूजता था, अब तो बाबू 'काली' में डूबा करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उलटफेर

दृश्य १

[बम्बईकी एक चाल । दरवाज़ेपर हलकी थपकी]

सत्यपाल : [हलकी आवाज़में] डाक्टर साहब, डाक्टर साहब.....

[अन्दरसे एक बच्चेकी आवाज़] कौन जोहये ? कौन है ?

सत्यपाल : मैंने कहा डॉक्टर साहब हैं ?

एक बहनजी : तमे कोण छो ? तुम कौन हो ?

सत्यपाल : हैं हैं हैं, यह प्रश्न अत्यन्त गहन है कि मैं कौन हूँ ? मैं ? कौन ? हूँ ? जी जी जी मुझे इसीके बारेमें सन्देह है कि मैं हूँ भी या नहीं । या जो हूँ वह मैं ही हूँ या और कोई छायामात्र है । मैं...[चुटकी बजाकर] अच्छा याद आया, कह दीजो कि एक मनुष्य हूँ । मनुष्य यानी इनसान, नहीं आदमी हूँ ।...

बहनजी : आपका नाम क्या है ?

सत्यपाल : नाम ? यही तो सबसे मुश्किल सवाल आपने पूछ लिया ? [इधर-उधर जेब टटोलकर] मैं अपना विजिटिङ् कार्ड तो वहीं पागलखानेमें भूल आया । अब अब....समझ लीजिए कि मैं बेनाम, गुमनाम, अनाम, नामहीन हूँ । जैसे हम हिसाब करते हैं तो उसमें कोई रक़म मानकर चलते हैं । समझ लीजिए कि मैं एक्स हूँ ।

बहनजी : अच्छा एक्स साहब या एक्स रे साहब ! आप यहाँसे चले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाइए। आपका यहाँ कोई काम नहीं है। पागलखानेसे सीधे चले आ रहे हैं और हमारे ही घरमें।

सत्यपाल : नहीं, मैंने सुना कि यहाँ डाक्टर मनसुखलाल, मनके रोगोंके डाक्टर रहते हैं।

बहनजी : वो यहाँ नहीं रहते। उधर दूसरे मालेमें रहते हैं। जाओ।

सत्यपाल : अच्छा जाता हूँ। यह लो एक लेमनजूस। इसको लेनेमें कोई पागलपन तुम्हें छूतकी तरह नहीं लग जायेगा। सुनो नौजवान, दोस्त, पागलखाने जानेसे पहले मैं अपने प्रान्तका नेता था, ब्रह्मचर्यपर मैंने किताब लिखी थी, मैं कविता भी लिखता था, पर यों अवाक् मेरी ओर ताकते हुए क्यों खड़े हो? क्या मैं कोई अजूबा हूँ। भाई जिन्दगीमें ऐसा कुछ हो गया कि वहाँ जानेसे पहले हार, माला-फूल, गजरे सब पहनाते थे, लोग तालियाँ बजाते थे और अब वह जनता कहाँ है? अब तो जनता नहीं, अब निपट मैं ही हूँ, अकेला मैं। फ़र्क़ आ गया! भाइयो और बहनो! बम्बईके चाल निवासियो, आगाह करता हूँ कि बहुत बड़ा खतरा आपके सामने है। ट्रामे चलना बन्द हो जायें, कोई परवाह नहीं। चार दिन बिजली बन्द हो जाये, तो भी कोई मुश्किल नहीं। सबसे बड़ा खतरा आप जानते नहीं आपकी आत्माके खो जानेका है। यानी कि आप उसे पहले ही खो चुके हैं·····

[बूढ़े, बच्चे, मर्द, औरतें सब हँसते हैं]

बहनजी : जाओ, जाओ, लेक्चर मत पिलाओ। जहाँ जाओ वहीं उपदेश है। स्कूलमें, गेदरिङ्गमें, खेल परेडके मैदानमें, लाउड-स्पीकरपर, अखबारमें, हर आदमी बस हमें अच्छा आदमी बनाकर छोड़ेगा। रहने भी दो यह बातें। जाओ, जाओ···

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक पड़ोसी : तद्दन सरफरेलो माणस ।

दूसरी आवाज़ : माथा खोराच होए गेलो ।

तीसरी ,, : फिरलंय त्याचं ।

चौथी ,, : [भारी आवाज़] पागल ।

सत्यपाल : [ट्रेजिक आवाज़में] डॉक्टर···डॉक्टर···

डॉक्टर : [दरवाज़ा खोलकर] कौन है ? अन्दर आइए । आइए, बैठिए ।

[दरवाज़ा बन्द]

दृश्य २

डॉक्टर : तो आपका नाम सत्यपाल था ?

सत्यपाल : जी हाँ, सब इसी नामसे मुझे पुकारते थे । बारह बरस गुरुकुलमें रहा डॉक्टर····मैंने किसी स्त्रीकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देखा । कोई शृंगारिक गीतकी कड़ी कानमें भूले-भटके पड़ गयी तो कानोंको हाइड्रोजन परोक्साइडसे साफ़ किया । आप निश्चित जानिए कि मैंने ज़िन्दगीमें कोई पाप नहीं किया । और फिर भी डॉक्टर ऐसा हमारा भाग रहा कि "जाहा चाई ताहा भूल कोरे चाई, जाहा पाई ताहा चाई ना ।" जो चाहा वह गलतीसे चाहा, जो पाया वह चाहा नहीं था ।

डॉक्टर : मतलब यह कि आपकी ज़िन्दगीमें प्रेम-निराशा और दूसरी कई किस्मकी फ़्रस्ट्रेशन्स····?

सत्यपाल : छोड़िए भी । ये एक लाखकी पहेलीवाला इनाम मुझे न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलता तो मैं डॉक्टर, पागलखाने न गया होता। पर देखिए इस दुनियामें खुशी भी ज़ाहिर करनेकी चोरी है, सैरे आम रोना तो बुरा माना ही जाता है। अब क्या करें दोनों तरफ़से मुसीबत है। सच बोलो तो पागल, झूठ बोलो तो जेल ही है।

तेरे आज़ाद बंदोंकी न ये दुनिया न वो दुनिया,
यहाँ मरनेकी पाबंदी वहाँ जीनेकी पाबंदी।

डॉक्टर : बहरहाल आपको शाइरीसे शौक़ है ?

सत्यपाल : शौक़ ? अजी जनाब मैंने वो वो कवि-सम्मेलनके अखाड़े जीते हैं कि आपको क्या बताऊँ ? हम तब कविता क्या करते थे, बस गीत-ही-गीत लिख डालते थे। एक सिगरेट जलायी, एक गीत बन गया। तब हमने गीतोंकी एक फ़ैक्टरी खोल दी थी। जैसी ज़रूरत हो वैसे गीत सप्लाई कर देते थे। बच्चोंके लिए, बूढ़ोंके लिए, औरतोंके लिए, गरमीके, सर्दीके, बारिशके, सब तरहके गीत लिखते थे। और हमने अपना तख़ल्लुस रख छोड़ा था 'वंचित'।

डॉक्टर : "पंचित" माने ?

सत्यपाल : यही महरूम डिप्राइवड्। और असल बात यह थी कि इसको तुक भी अच्छी और जल्दी बन जाती थी।

डॉक्टर : क्या मतलब ?

सत्यपाल : जैसे : तेरे आँसूसे सिंचित
देख कपोल जो किंचित्
हो गया चलित दो क्षन चित।
देख जो काकुल कुंचित
उलझा दिलका सब संचित,
रह गये यहाँ बस वंचित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डॉक्टर : खूब ! खूब ! आपको कविता भी खूब याद है। पर मुझे लगता है कि पागलखानेमें रहते हुए आपको कविता लिखनेकी ज्यादह तबीयत हुई होगी।

सत्यपाल : तब तो मैंने एक महाकाव्य लिख डाला था। पर वह बात बादमें बतायेंगे। इस वक़्त तो डॉक्टर साहब मेरी सबसे बड़ी तकलीफ़, या मेरा मानसिक रोग या पीड़ा या वेदना या दर्द या कठिनाई या समस्या, मैं कैसे समझाऊँ कोई शब्द मेरी बातको बयान नहीं कर सकता, वह यह है कि मैं सच बोला करूँ या नहीं ?

डॉक्टर : ज़रूर बोलिए। क्या मुज़ायका है ?

सत्यपाल : [डरकर, सहमकर] डाक्टर साहब, मुझे फिर वे पागलखानेमें डाल देंगे। सच ये लोग सुनना ही नहीं चाहते। इनको मीठी, चिकनी-चुपड़ी, झूठी सुननेकी आदत है। देखिए आप गारण्टी लेते हैं कि मैं सच बोलूँगा और कोई मेरी इस सत्यपाल 'वंचित' की वाणीको बंद नहीं कर देगा ? भाइयो और बहनो ! आजसे मैं खुदाको हाज़िर नाज़िर जानकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि सच ही बोलूँगा, झूठ नहीं चाहे फिर वह कितना ही कड़ुआ हो चाहे जिस स्थान और चाहे जिस समय मैं अपने नामके पहले हिस्से सत्यका सिक्का चलाऊँगा। [धीमी डरी हुई आवाज़में] मुझे डर है कि वे फिर मुझे पागलखानेमें डाल देंगे।

डॉक्टर : आप डरिए नहीं। अब कोई पागलखाने कहीं रहे नहीं हैं। आप जानते हैं कि मनोविज्ञानकी नयी शोधके हिसाबसे हम सबमें कुछ-न-कुछ पागलपनका हिस्सा ज़रूर रहता ही है। मसलन आपमें एक बटा तीस पागलपन हो मुझमें एक बटा सत्तर पागलपन ज़रूर है। इसे दूर करनेका एक ही उपाय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि आदमी, जो भी उसकी इच्छा हो पूरी करे। अब आप बोलो कि आपकी क्या इच्छा है ?

सत्यपाल : मेरी केवल मात्र एक ही आकांक्षा है जी, कि मैं नाटक, थियेटरके काममें जादू.....।

डॉक्टर : [कुछ सोचकर] आपकी शक्ल-सूरत, कपड़े वग़ैरह देख-कर कोई आपको एक्टर तो बतायेगा नहीं। फिर ?

सत्यपाल : नहीं मुझे नाटकका लेखक, गीतकार, बनना है जी।

डॉक्टर : तो बहुत अच्छा है। आज ही आप 'उलटफेर' कम्पनीमें जाईए। मेरे वहाँ एकाध पहचानके आदमी हैं। मैनेजर खलीफ़ा हारून साहबको मैं चिट्ठी दे दूँगा।

सत्यपाल : मगर डॉक्टर साहब, वहाँ मैं सच बोल सकता हूँ ? इजाजत है।

डॉक्टर : मेरी तरफ़से तो कोई उज्र नहीं। मगर वहाँ "हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य पिहितं मुखम्" है।

सत्यपाल : क्या मतलब ?

डॉक्टर : वहाँ सोनेके ढँकनेसे सत्यका चेहरा पूरी तरह ढँका हुआ है।

सत्यपाल : सचमुचमें सोनेके मुखौटे पहनकर वे लोग चलते हैं ?

डॉक्टर : नहीं जी, कोई मास्क नहीं होता, उनका चेहरा खुद एक बड़ी नकाब है।

सत्यपाल : मास्क क्या डॉक्टर साहब ? हमने तो सिर्फ़ मास्कोका नाम सुना था।

डॉक्टर : सत्यपालजी, यहाँ शब्दोंकी समानता देखकर कविता मत चलाइए। मास्कका मास्कोसे कोई तआल्लुक़ नहीं। यह लीजिए मैं चिट्ठी लिख देता हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृश्य ३

['उलटफेर' कम्पनीमें]

डाइरेक्टर अन्धेरे: [चीख़ रहे हैं] ये लीजिए जनाब आपकी स्क्रिप्ट तीन कौड़ीकी है। हम इसे प्रोड्यूस नहीं कर सकते। कोई बात बनती ही नहीं। सस्पेन्स नहीं है, ड्रामा नहीं है। इमोशनलिटी नहीं। इसे आप ह्यूमर कहते हैं? अजी ज़िन्दगीमें यह सब तो रोज़ ही चलता है। जबतक हकलानेवाला कोई न हो, रेंककर बोलनेवाले काजीजी न हों, जबतक तकियाकलामवाले लखनौआ नवाब न हों, ह्यूमर बन ही कैसे सकता है। आप ह्यूमर लिखेंगे? सूरत तो देखिए अपनी। हमेशा लम्बा चेहरा बनाये रहते हैं। जाइए-जाइए, उलटफेर कम्पनीको क्या आपने बावर्चीखाना समझ रखा है?

आगन्तुक : नहीं जी, वा जी मैंने अबतक पन्द्रह नाटक और पाँच फ़िल्म स्टोरी लिखी हैं।

अन्धेरे : लिखी होंगी ऐसी-वैसी। न आपको कहानीमें टेंपों है, न सीक्वेन्स जोड़े गये हैं, न कोई डूएट है, न रोमांस है। और डांस तो एक भी नहीं!

आगन्तुक : जी ऐसा था कि नाटक आपने द्रौपदीपर लिखनेको कहा था।

अन्धेरे : तो क्या हुआ, चाहे सीता हो या सावित्री आप समझते नहीं। डांस ज़रूर होना चाहिए वर्ना बॉक्स आफ़िसका क्या होगा। डांस नहीं; एकदम फ्लाय नहीं हो जायेगा।

आगन्तुक : लेकिन तो साहब मैंने इसपर.....।

अन्धेरे : जाइए आप....[टेलीफ़ोन] हलो गुडमार्निङ्, गुडमार्निङ्।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कब आयीं आप ? अकेली हैं या सेठजी साथमें हैं ? वाह-वाह आइए-आइए कम्पनी आपकी ही है। आप ही तो मालिक हैं। हाँ, हाँ जरूर ! क्या कहा 'हनूमानकी पूँछ' का रिहर्सल कबतक खत्म होगी ? बस थोड़ी-सी और रह गयी है। और ब्रग्राऊँम्यूज़िक देना है। लंका जाते हैं तब स्पानिश म्यूज़िक दे दिया है। अबके चौमासेमें 'नाटक' तैयार हो जायेगा। हाँ, जी, माइथोलौजी है इसमें ट्रिक्सी नहीं ट्रिक्सीन हैं—ब्वोंधड़ चलने लग गया। पानीके भीतर आग लग गयी। यही सब होता है। आइए, आइए, जरूर आइऐ····

[टेलीफ़ोन रख देता है]

अन्धेरे : ऐं ? कौन हैं ? मिस्टर एस० वन चिता ! ये कौन उल्लूकी दुम फाख्ता हैं। डॉक्टरकी चिट्ठी है। अच्छा, आने दो !

सत्यपाल : नमस्ते !

अन्धेरे : गुडमार्निङ्ग !

सत्यपाल : हूँ, मैंने कहा आदावर्ज़ !

अन्धेरे : येस, वाट डु यू वांट ?

सत्यपाल : मुझे ज़ी अँगरेज़ी ज़्यादह नहीं आती। आप जानते हैं कि भारतवर्षसे अँगरेज़ी भाषियोंका प्रस्थान हो जानेके पश्चात् अब इस भाषाके प्रति मेरी आस्था और ममता और मोह और व्यामोह····

अन्धेरे : मुख्तसरमें कहिए आप क्या चाहते हैं ?

सत्यपाल : मैं जी नाटक या आपकी कम्पनीमें गीत लिखना चाहता हूँ।

अन्धेरे : आपने पहले कहीं लिखे हैं ?

सत्यपाल : ज़ी नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्धेरे : तो फिर हम कैसे जानें कि आपके गीतमें वो 'पेप्' है, वो 'इट' है, वो 'हिट' है।

सत्यपाल : एक बार आप आज़माके तो देखिए ?

अन्धेरे : अच्छा अब डॉक्टरने कहा है तो मैं हमारे म्यूज़िक डाइरेक्टर रजनिनाथको बुलवाता हूँ उनसे आप बात कर लीजिए।

[रजनिनाथ गुनगुनाते हुए आते हैं।]

सजनी····रजनी····

टट्टरट्ट टट टट्····प्या····र

तू और मैं टाररारारारा

मैं और तू टाररारारारा

ये दुनिया

केनिया, कुस्तुन्तुनिया सब बेकार

प्यार·····र

रजनिनाथ : [गद्यमें] कैसे याद किया डाइरेक्टर साहब।

अन्धेरे : ये ज़रा नया एक पोएट आया है। इसे ज़रा ड्रामाका पानी दिखा देना।

रजनिनाथ : चल रहे हैं पोएट साहब ?

सत्यपाल : नहीं यहीं बातें हो जायेंगी।

अन्धेरे : बात ये है कि अभी यहाँ सेठजी और मिस कामिनी आ रही हैं।

सत्यपाल : कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। सेठजीके लिए भी मेरे पास एक पत्र है। मोटा सेठने लिखा है।

अन्धेरे : अच्छा तो बैठिए।

सत्यपाल : तो संगीत दिग्दर्शन जी ! आप मुझसे क्या चाहते हैं ?

रजनिनाथ : मैं ऐसा गीत चाहता हूँ जिसमें एकदम हवायन गिटारका पौस भी लग जाये, थोड़ी-सी क्लासिकलकी बघार भी देनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जरूरी है। और फिर उसमें एकदम 'सड' और 'सपाट' और 'सूटिङ्' और 'सेंटिमेंटल' सफ़ाई चाहिए। जैसे हमारे पिछले खेल 'आकाशके तारे' में हमने हीरोइनका गाना दिया था।

टट् टरट्रट्टा टरटट्टा टाटरा
दुनिया है एक दरिया
आँसू-भरी बदरिया
लला लला लला लला
टायं टायं टायं टायं टायं
मेरा मगवा रोकत,
मोरी गगरी फोरत,
पनिया भरन कैसे जाऊँ।

[एक चक्करदार तान]

सत्यपाल : ये जो कुछ आप कह रहे हैं तो वाद्योंकी नकल हुई, इसमें गीत कहाँ हुआ ?

रजनिनाथ : आप समझते नहीं। गीत वही अच्छा है जिसमें शब्द सबसे कम हो बस आर्केस्ट्रा ही आर्केस्ट्रा हो। आप समझते हैं कि आपकी कविताके लिए यहाँ गीत लिखवाते हैं ?

सत्यपाल : हाँ, मेरा कुछ अनुमान ऐसा ही था।

रजनिनाथ : ग़लत बात है। यहाँ गीत पाप्पुलर होते हैं। इसीसे ओ ssssss ओ हो के लिए इसमें खटके मुरकियाँ सब जरूरी हैं।

सत्यपाल : ये तो सब हमसे नहीं होगा, अपने राम तो गंगाजल स्याही-में डालकर नर्म शृंगार लिखते हैं। हमें इन सब नखरोंकी क्या जरूरत ? जहाँ वाग्देवी प्रसन्न हुईं कि···।

रजनिनाथ : तो आप थियेटर क्यों आये···आपको तीरथ जाना चाहिए था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्यपाल : हाँ जानेसे पहले सोचा ज़रा सेठजीसे भी मिलता चलूँ।

अन्धेरे : बैठिए आप यहीं बैठिए। हम तो अब अपने स्टूडियोंमें जाते हैं। सेठजीके साथ मिस कामिनी भी तो आ रही है। रजनिनाथ, आज ज़रा एक्स्ट्रा फ़ाइन म्यूज़िकल इन्स्ट्रुमेण्ट हो, समझे। नहीं तो कलसे फिर दूसरी कम्पनीका दरवाज़ा देखना पड़ेगा, जानते हो न नाम ही इसका 'उलटफेर' कम्पनी है।

[दरवाज़ा खुलनेकी आवाज़]

सत्यपाल : अब क्या करें? सब लोग चले गये। सेठजीकी राह देखते बैठना ही होगा।

दृश्य ४

[चपरासी आकर घबड़ायी आवाज़में घोषित करता है।]

चपरासी : सेठजी आ गये।

सेठ कचौड़ीमल : तो कामणी बाई, अबकी थेटर ऐसा बसौ कि बस देखनेवाले कूँ जणम-जणम तक याद रहे वे।

मिस कामनी : हू इज़ दिस ईडियट्।

सेठजी : कांई बोल्या। [चौंककर सत्यपालकी ओर देखते हैं] कौन हो जी। क्या काम है आपका यहाँ? चपरासी! इन्हें यहाँसे भगा दो····

सत्यपाल : [हकलाकर] स स्सेठजी, मेरा शुभ नाम सत्यपाल वंचित है। मैंने प्रभाकर पास किया है। मैं आपके पास मोटा सेठ की एक चिट्ठी लाया हूँ। [देता है।]

सेठजी : कांई लिख्यो है? अच्छा तो आप स्टोरी लिखते हो। अभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो हमको ज़रूरत नहीं है।

मिस कामनी : दीज़ रायटर्स ! दे आल लुक सो अलाइक !

सत्यपाल : मैं गीत भी लिख लेता हूँ।

सेठजी : हाँ वो "रामभजन कर प्राणी" अच्छा गायण लिखा था कुमा सावने, मगर म्यूज़िक डारेक्टरने कंडम टचवा दे दिया।

मिस कामनी : ये स्टोरी-राइटर क्या कहता है ?

सत्यपाल : जी, मैंने कुछ सत्यके बारेमें लिखा है।

सेठजी : यहाँ सत्यनारायणकी कथा हो तो बोलो। और सचाईका नाटकसे क्या सम्बन्ध है ?

सत्यपाल : आप ज़रा सुन तो लीजिए। नाटक देखनेवाले भी आखिर चाहते हैं कि सत्यकी ही चर्चा हो। मैंने ऐसी अच्छी सच्ची और ऊँची कविताएँ लिखी हैं कि—

सेठजी : पर मिस्टर, आप हमारे बीड़ीके कारखानेके लिए कुछ लिख सकते हो ? बीड़ीकी तारीफ़में, जाहिरात माटे कविता लिखके बताओ। इस स्वरूप सुन्दरी कामिणीके फ़ोटूके साथ जम जाये तो फिर पब्लिसिटी फर्स्ट क्लास हो जाये····

मिस कामनी : [शरमानेका अभिनय करके] छिः आप भी ! मैं कोई सुन्दरी हूँ ?

सत्यपाल : मेरा मत पूछें तो आप सचमुच सुन्दरी नहीं हैं। हाँ सेठजी, जितने सुन्दर हैं उतनी ही मात्रामें आप भी सौन्दर्यवती हैं।

चपरासी : [जल्दीसे पास आकर चुप करते हुए] शूँ : [ज़रा धीमे स्वरमें] ये सब यहाँ क्या बकते हो ?

सत्यपाल : यहाँ तो सेठजी हमें सब झूठ-ही-झूठ नज़र आया। वो गाने-वाला आपका डायरेक्टर आया था, उसे गाना नहीं आता। वो प्रोड्यूसर कोई आया था, उसे क्या प्रोड्यूस करना है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसका पतानहीं। और अपनी नायिका जो हैं ये उप-नायिका भी नहीं जान पड़तीं।

सेठजी : तो क्या थारो ये केहणो है कि मैं सेठजी सेठजी ही नहीं हूँ, नकली सेठजी हूँ। जबान सम्भालके बोलो! समझे?' चपरासी, चपराऽसी····

सत्यपाल : सेठजी, सुनिए, मेरी एक बात सुन लीजिए, झूठ बोलनेपर मुझे पागलखाने भेज दिया था। सो अब मैंने प्रतिज्ञा की है कि सच ही बोलूँगा केवल सत्य! निखालिस, विशुद्ध, सत्य!! सत्यके सिवा और कुछ नहीं। आप मुझसे झूठ बुलवा रहे हैं। आप श्रेष्ठी हैं या नहीं यह तो आपके मनकी श्रेष्ठतासे सिद्ध होगा। चूँकि आप चपरासीको बुलवा रहे हैं कि मुझे गरदनिया देकर वह निकाल दे इससे यह सिद्ध हुआ कि आप श्रेष्ठ नहीं हैं। एक अभ्यागत आगन्तुक अतिथिके प्रति ऐसा अन्याय, अत्याचार, असत्कारपूर्ण व्यवहार। अतः आप सेठ न होकर नेठ हुए।

मिस कामनी : सेठजी, ये आदमी बोलता तो बहुत इण्टरेस्टिङ् है। इसका डायलाग कुछ सुना ही जाये?

सेठजी : अच्छा! ऐई चपरासी! तुम प्रोड्यूसर और म्यूज़िक डायरेक्टर सबको बुलाओ। मिस्टर राइटर, तुम अपना डायलाग बोलो। हम तकतक सुन लेंगे। हमें बादमें डांसका रिहर्सल देखने जाना है!

सत्यपाल : मेरा मंचके लिए लिखनेका अभ्यास तो नहीं है, पर आप कहते हैं इसलिए एक जो संवाद लिखा था, वह पढ़कर सुनाता हूँ सुनिए, पहले आप जान लें कि ये दो व्यक्ति जो बोल रहे हैं ये दोनों कौन हैं। ये दुनिया जब भयानक युद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और बमबाज़ीसे नष्ट हो गयीं तब बचे हुए दो ही आदमी हैं, एक पुरुष है एक स्त्री है।

मिस कामनी : लड़ाई और बम। सेठजी, ये तो जासूसी नाटकके लिए बहुत अच्छा सब्जेक्ट होगा।

सत्यपाल : पुरुष स्त्रीसे कहता है, हे पिए!

मिस कामनी : क्या कहता है पी, ए? यहाँ पीये-वीयेकी बात नहीं चलेगी। पता नहीं यहाँ शराबबन्दी है।

सत्यपाल : देवीजी, यह संस्कृतका संबोधन है।

सेठजी : तो क्या थारो हीरो और हीरोइण संसकिरितमां बोले है। ऐसी पिक्चर तो कोई देखने ही नहीं आवेगो। आपणी रोजकी बोल चालमां बोलवा दो।

सत्यपाल : जी, आप सुन तो लीजिए! स्त्री पुरुषसे कहती है, हे प्रियवर!

पुरुष कहता है, अब क्या होगा?

स्त्री कहती है, अब क्या होगा?

पुरुष कहता है, कुछ नहीं होगा।

स्त्री कहती है, कुछ नहीं होगा।

इतनेमें एक ज़ोरोंका धमाका होता है। फिर कोई बम बरसता है। अंकित स्त्री-पुरुष भी मर जाते हैं।

सेठजी : तो अब स्टोरी आगे चलेगी किस तरे? हीरो-हीरोइणको तो पहले ही सीनमें दोणोंका एक संग डेथ कर दीए है?

मिस कामनी : अब आपने आगेके ये २०० पन्ने रंगे कैसे हैं?

सत्यपाल : इसके बाद स्त्री और पुरुषके भूत फिरसे खड़े होते हैं। जागते हैं, हँसते हैं, बोलते हैं, नाचते हैं, मज़ा करते हैं, समझे हज़ूर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिस कामनी : भूतोंका आगे क्या होता है ?

सत्यपाल : जो हर भूतका होता आया है ।

मिस कामनी : क्या मतलब ?

सत्यपाल : यानी, हर भूतका वर्तमान बना है, वर्तमानका भविष्यत् बना है और फिर इनका भूत बन गया है ।

अन्तिम दृश्य

[फिर बम्बईकी वही चाल]

सत्यपाल : डाक्टर साहब ?

पड़ोसिन : अरे यहाँ कोई डॉक्टर-वाक्टर नथी रहेतुं । आगला जाओ, आगल !

सत्यपाल : परन्तु देवीजी !

पड़ोसिन : कोण देवी, यहाँ देवी कहा तों मारकर बाहर निकाल देंगे ।

सत्यपाल : अच्छा बाबा, हम चलते हैं । मैंने आपको देखकर सच ही कहा था । महाकाली, भद्रकाली, चामुंडा, शतरूपिणी !··· देखो बच्चे ! डॉक्टर मनसुखलाल यहाँ रहते थे, उनका बोर्ड कहाँ गया, उन्हें क्या हुआ ?

बच्चा : वे तो विलायत चले गये ।

सत्यपाल : अच्छा ! फिर अब क्या होगा ? सच बोलनेकी आदतसे कैसे छुटकारा होगा। इस दुनियामें तो लल्लो-चप्पो, जैसे ज़माना देखा वैसे लुढ़क गये, ये सब चालाकियाँ कब और कैसे सीख सकेंगे ? मुश्किल है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चा : आप अपने-आपसे भी बातें क्यों करते हैं ? ऐसा तो नाटक-में होता है।

सत्यपाल : हाँ बच्चे ! लाइफ़ इज़ ए स्टेज !

बच्चा : आप गाना जानते हैं ?

सत्यपाल : नहीं भाई, कैसा उलटफेर हो गया। आये थे गीत लिखने, जाते हैं, गीत बनकर……।

बच्चा : ये तो तद्दन पागल छे।

पड़ोसिन : गांडा माणस !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्दा लोकगीत-निर्माण फ़ैक्टरी

आप अलास्कामें कभी गये हैं ? नहीं ! बहुत उत्तम है। क्या कहा, आपने अलास्काका नाम भी नहीं सुना। अधिक उत्तम है। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि मैंने इस छोटे-से जीवनमें पाँच लाख लोकगीत जमा किये हैं। उनमें अलास्काके गीत भी हैं। आप सुनकर हैरान क्यों होते हैं ? यह मूल भाषामें नहीं है कि आपको कोई कठिनाई हो। जब कुमायूनीके गीत सरकारी अखबारोंमें खड़ी बोलीमें अनुवाद रूपमें छप सकते हैं, और आजकल जब सिनेमासे शिक्षामन्त्रालय तक लोक-संस्कृति, लोक-कथा, लोक-वार्ता, लोक-पहेली, लोक-संगीत, लोक-नृत्य, लोक-चित्रकला, लोक-स्थापत्य, लोक-शिल्प, लोक-खिलौनानिर्माण, लोक-वेश, लोक-दर्शन और लोक-भाषण आदिका भाव तेज़ हो रहा है; मैंने यह कमालका काम बहुत कम समयमें पूरा कर डाला है। आपने कहा कि मेरे जीवनके वर्षोंके सप्ताहोंके दिनोंके घण्टोंके मिनिटोंसे ज़्यादह मेरे जमा किये हुए गीतोंकी संख्या है तो उससे आप क्यों चौंकते हैं। आप जानते हैं सवेरे-सवेरे आकाशवाणीपर देवगण क्या सुनाते हैं : "मानव मानव सब हैं समान !" अर्थात् जो है सो मानवी भावनाओंका सर्वत्र ऐसा साधारणीकरण है कि कलकत्ता हो या कैलिफोर्निया, मास्को हो या मारवाड़, मनुष्य मात्रके दो आँख, दो कान, एक नाक आदि एक ही-सी हैं। अर्थात् उसकी अप्रामाणिकता, अन्धता, बधिरता, सुगन्ध-दुर्गन्धको न पहचाननेकी शक्ति भी सब जगह एक-सी है। इस हिसाबसे मेरे लोकगीत विश्वात्मक हैं। वे 'या देवी सर्वभूतेषु' की भाँति सर्वव्यापी हैं। उनमें विराट् पुरुष (और उसके साथ जुड़ी हुई विराट् नारी आती ही है) के दर्शन, दिग्दर्शन, प्रदर्शन, सुदर्शन और बन्दरशन सब मिलते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप कहते हैं आपको विश्वास नहीं होता ? यह सब कुछ बहुत आसान है। जिस प्रदेश (या आजकल 'अंचल' और उसके छोरका ज़ोर है तो आंचर सही) के लोकगीत बनाने हों, वहाँकी एकाध नदी या नदिया, एकाध पहाड़ी या तुंग-शृंग और दो-चार फूल-पौधों, पशु-पक्षियोंके नाम जानना ज़रूरी है। बाक़ी तो यह हाड़-मांसका ढाँचा जो है सो सब जगह एक ही गीली मिट्टी-का बना है। माटीके माधो वैसे ही हैं, रधिया अहीरिन भी वैसी ही भुर-भुरी मिट्टीकी बनी है।

अब मैं शुरू करता हूँ अलास्का या टिम्बक्टू यः होनोलुलू या चिम्बोरैज़ो या कुर्सियाङ्ग या घुमकुरिया (या कहींके भी आप समझ लें) की पहेलियों-से। पहिचानिए ?

"दो आईने, नीचे दो गोल ढलान"

—उत्तर : आँखें।

"बीस खेत, काटो तो फिर उग आयें ?"

—उत्तर : नाख़ून।

'एक फलमें पानी
पानीमें तना
तने पै छतरी
छतरीपर पै तीखा स्वाद घना
और चखनेमें गडरियेकी सीटी'

—उत्तर : हुक्का।

आप पूछ रहे हैं अलास्कामें हुक्का कहाँसे आया। यह धरमधक्का है, आप हुक्केके बजाये चिरूट लगा दें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

"गोदीमें रखो तो चिल्लाये
ज़मीन पै रखो तो चुप हो जाये !"

—उत्तर : ढोल।

क्या कहा आपने—ढोलमें बड़ी पोल है ! भाई साहब—यह जेन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साहित्य है। जनताका तंत्र है, जनताका युग है, जनताको जन्ता भी लिख डालो और बेचारी अजिंठाकी चित्रगुफाओंको 'अजंता' कहकर अ-जनता लिख डालो तो भी कोई पूछनेवाला नहीं है। आपकी अक़्लकी दाद जरूर मिलेगी। भारतकी राजधानीके केन्द्र नयी दिल्लीमें बेचारा देवनागरी शब्द 'जनता' पाँच तरहसे अलग-अलग 'सपैलिगों' में पढ़नेको मिल जायेगा नामपटोंपर : JANTA, JAINTA, JANYTA, JENTA, JANATA—यही तो हमारे राष्ट्रभाषा-प्रेमियोंका पंचमुख शील है—बेचारे हिन्दी शब्दको चाहे जैसे लिखो। शीलको शिला लिखने-बोलनेवाले भी मिलेंगे। और इस रोमनकी लीला क्या कहिए ? एक गायिका स्त्रीका नाम था गीता घटक—रोमनसे हिन्दीकरण हुआ : गीतघातक। मोडक-का मोदक और हैंबर्टसनसे अंबट्टन (और तामिलमें उसका अर्थ नाई होता है इस लिए) वारवर्स ब्रिज तककी कहानी तो मशहूर है। फिर कई जगह ज़ेर-ज़बर भी अपना ज़ोर लगा देते हैं। सिद्धेश्वरको रोमनमें सुधेसर लिखा हुआ टेलीफ़ोन डिरेक्टरीमें मैंने देखा है। और यदुवंशीको जादूबंसी-ऐसे ही विविध प्रकारसे (Y को J नार्वेजियनमें पढ़ते हैं उस वज़नपर) बोलते हुए सुना है। कृष्णका कृष्णा और सीताका शीत यह आरामसे बना ले सकते हैं। बेचारी 'नाग्री' (ऐसा ही कई लोग नागरीको लिखते हैं) और उसमें प्रान्तीय ढंगसे नाम लेखनकी विशेषता पंजाबी 'आर्शीवाद' और 'परभाकरकी प्रोक्षा' पास करनेवालोंकी 'सप्रीट' और 'प्रोवियन' का आनंद एक ओर तो दूसरी ओर कालीकटको 'कोषीकोड़' लिखनेपर आग्रह करनेवाले और 'भारशिटी' के कलकतिया उच्चारणका कुछ न पूछिए। ये सब लोकगीतके वज़नपर लोक-उच्चारण हुए। सुनते हैं 'देस पंजाब दे इक्क नामी गिराम्भी अदीब' ने कालिदास जयन्तीपर मस्कवामें उनके नाटक का यों उच्चारण किया—'माल-बिका-गिन-मित्तर'। सुहृद् सुधी पाठक-वृन्द पहचान गये होंगे कि यह 'मालविकाग्निमित्र' का ही प्राकृत यानी ज्यादह 'नैचरल' रूप है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो अब मानते ही नहीं हैं तो अलास्काकी पहले एक लोरी सुनाऊँ, विरह-गीत बादमें सुन लीजिए। लोरी यों है :

नन्हे मुन्ने सो जा
मेरे लाडले सो जा
सो जा
सो जा
सो जा
आसमानमें तारे जागते हैं
नदी सोयी पहाड़ सोया
मेरा बच्चा क्यों जागे
सो जा !
नहीं तो अँधेरेका राक्षस
म्याऊँ म्याऊँ करता आयेगा
मुन्नेकी मलाई खा जायेगा।
सो जा
मेरे राजा बेटा सो जा
गहरी नींद सो जा !

अब आपकी हिम्मत है कि आप मना करें कि यह मयूरभंजकी लोरी नहीं है या मराठवाडाकी लोरी नहीं है या मौंटरीयलकी नहीं है या मैंचेस्टरकी नहीं है या मादागास्करकी नहीं है ?

अब एक विरहिनका विप्रलंभ-शृंगारसे भरा, प्रवत्स्युत्पतिका नायिकाका (जिसे किसीने साप्ताहिक अखबारमें रंगीन सीनियाई चित्रके ऊपर छापकर भी "तुम्हारे नाम पाती" नहीं लिखी है ऐसी अबोध, निरी मुग्धा, कच्ची-किशोरीका) विदा-गीत सुनिए जो आँसुओंसे लिखा गया, आहोंसे फुलाया गया, तड़पनसे तपा, वेदनामें विहँसा, यातनाकी याद (या यादकी यातना) से यामा-दिन घोंटा गया—ऐसा यह दिल-खेंचक लोकगीत है :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आसमानके कोनेमें चाँद ढल गया।
बादल बिखर गये।
दो पक्षी डालपर बैठे हैं
ओ पिया! तुम्हारी याद आती है
मांचोलोमो (यहाँ पाठक सुविधानुसार कोई
पर्वत नाम लगा लें) के शिखरपर बर्फ़ जमी है
ऐसे शिशिरमें मैं अकेली
सूखे पत्ते
दुबली नदी
साँय साँय हवा
ओ दूर देसमें बसे दिलके टुकड़े! तुम्हारी याद
आती है
आती है
सताती है
समा जाती है
आकर फिर जाती ही नहीं!

अच्छा भाई साहब! जान पड़ता है आपको यह लोकगीत रस आनन्द नहीं देता। मैंने नेपाल और सिंहल, स्याम और सिंगापुर, पेनाङ् और सोक्याङ्में जा-जाकर ये गीत जमा किये हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'अमरूद' इलाहाबादी

शहर-शहरकी अपनी-अपनी प्रसिद्धि है। कहींकी कोई चीज़ तो कहीं-की कोई। 'पानमें पान महोबेका पान', 'तालमें ताल भोपालका ताल', चुनारकी 'पाटरी', बनारसकी साड़ी, मिर्ज़ापुरकी कजरी और दिल्लीके लड्डू, सभीको नसीब नहीं होते। वैसे अगर कुम्भ मेलेकी कुचलनके लिए कुख्यात 'प्रयागजी'की किसी मामलेमें प्रसिद्धि हो तो वह हिन्दी-साहित्यिकों-के लिए है। 'साहित्यिकों विच्च साहित्यिक इलाहाबाद दा'—हमारे एक पंजाबी मित्र प्रीत नगरमें मुझसे कह रहे थे। अब साहित्यिक भी ऐसी नायाब चीज़ है कि ऊपरसे उसके भीतरका कोई पता आप नहीं लगा सकते। किसी ज़मानेमें इलाहाबादके 'अमरूद' प्रसिद्ध थे। उनमें भी यही सिफ़त थी। अब ये अमरूद अन्दरसे 'लाल' हैं या 'सफ़ेद', मीठे हैं या खट्टे या बिना स्वादके—यह सब केवल अनुमान-प्रमाणका ही विषय है—या फिर परम या चरम 'अनुभव'का। सो इन पंक्तियोंके लेखकका नसीब जागा कि बीसवीं सदीके ऐतिहासिक मध्यचरणमें सन् ४९ से ५२ तक ईजानिबको इसी महान् नगरी इलाहाबादमें रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। और अनेक छोटे-बड़े, ग़रीब-अमीर, बूढ़े-बच्चे, नौ-उम्र-ज़ईफ़, गद्य-पद्य-गद्य-पद्यमिश्रित, नाटकीय-अनाटकीय, औपन्यासिक-कहानीनुमा, रोमाण्टिक-रूखे, क्लासिक-थर्डक्लासी, पठित-अपठित-कुपठित, लोकनाथी, दारागंजी, सिविल लाइनीय, खुसरोबागीय, थार्नहिल रोडीय, टैगोरटाउनीय, अनब्‌रसिटी-वाले, 'जगाती-सोती' प्रतिभायुक्त, युगान्तरकारी, छूमन्तरकारी, स्वतन्त्र-परतन्त्र-गत्नोतन्त्र, 'पर'गतिशील-विप्रगतिशील, अपत्निक, पत्नीत्यक्त, द्वैपत्निक, एक-पत्नीवादी, पतित्यक्ता, विधवानुमा सधवा, 'पति-पत्नी-दुहुं श्रमजीवी' ऐसे विविध भाँतिके साहित्यसेवियोंसे लगाकर साहित्य-भक्षकों तकका निकट सम्पर्क, सद्भाव, स्नेह, सेवा, साबका और साक्षात्कार प्राप्त करनेका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सद्भाग्य भी इसी ललाट-लिपिमें विधनाने लिख दिया था। सो आज इस 'होली' (अँगरेज़ी अर्थमें) अवसरपर उन सब केश-विकेश, घुटे-मुंड़े अन-सँवरे, चश्मित-बेचश्मा, झुर्रियोंदार-टमाटर-जैसे, दुनियाके अंदेशेसे रुँआसे-चिर खिलखिलाते, सब प्रकारके चेहरोंका स्मरण करके एक साहित्यिक संस्मरण लिखनेका इरादा कर रहा हूँ। यह किसी एक व्यक्तिविशेषका संस्मरण नहीं है—यह इलाहाबादकी साहित्यमूर्तिका प्रतीक है। नाम इनका है श्री 'अमरूद' इलाहाबादी।

आपकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह 'नाना रूपाय, नानावेशाय' हैं। जब आर्यसमाजी आन्दोलन चला तब हार्मोनियम लिये हुए ऋषि दयानन्दकी तारीफ़में ग़ज़ल आपने ही सड़कोंपर गायी, जब गाँधीजी आये तो आप खद्दर पहनने लगे और जब मार्क्सवादने अपनी मौजें लेनी शुरू कीं आपकी कविताका युगान्तरकारी (इसमें 'तरकारी' तत्त्व प्रधान है, युग तो ससुरे अदलते-बदलते रहते ही हैं) परिवर्तन हो गया, बंगालमें जब अकाल पड़ा तब आपने चार पक्तियाँ उस चावलके बोरेकी एवजमें चमका दीं, और स्वराज्य आनेपर अब पंचवर्षीय योजनापर महाकाव्य आप ही लिख रहे हैं। इस महाकाव्यकी प्रगति अभी यहींतक हुई है कि आँकड़े आपने जमा कर लिये हैं, कवितामें संख्यिकीका यह शुद्ध नया प्रयोग आप करने जा रहे हैं। इस बीचमें 'अमरूद' जी धीरे-धीरे कविसे कहानीकार, कहानीकारसे नाटककार (आपकी नाट्य-प्रतिभा सन् ४६ में इलाहाबादमें आकाशवाणीका प्रसार-यन्त्र लगनेके बाद ही विच्छुरित हुई), नाटककारसे समीक्षक और इन सब रूपोंके बीच-बीचमें क्रमशः चिन्तक, विचारक, द्रष्टा, धुरीण,इत्यादि, इस हिसाबसे होते गये, जिस हिसाबसे आपकी पाठ्य-पुस्तकों को जी‍‍ने ... वालोंने ‌मँगवाया और उसपर कुंजिकाओं, फक्किकाओंके अम्बार लिखवाये। यह 'अमरूद'जीका समष्टिगत दृष्टिकोणसे सार्वजनिक रूप है।

वैयक्तिक जीवनमें 'अमरूद'जीने कई पार्टियाँ और उनके साथ उनकी 'आस्थाएँ' जीवन दृष्टिकोण इत्यादि बदले। ऐसा भी समय था जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्र-भाषा घोषित नहीं हुई और 'अमरूद' जी हैं कि गंगा किनारे वालूमें लोट रहे हैं, दहाड़े मार रहे हैं कि मेरी उपेक्षा क्यों हो रही है। हे प्रभु ! मेरा ध्यान करनेवाला, मेरी महत्ता पहचाननेवाला कब जन्म लेगा ? फिर एक ऐसा भी समय ईश्वरकी कृपासे आया कि युरोप, अफ्रिका, अजरबैजान, कामश्चटका, 'कज्जाक पिशाचील' था कि 'सुन दाइफांग' इत्यादि एक अन्तरराष्ट्रिय या (अन्ताराष्ट्रिय) अक्षर व्यवसायिकोंकी समस्त दृष्टियाँ इस जनपर केन्द्रित हो गयीं; यह है कि बेचारा अपनी आदतों से बाज़ नहीं आ पाया। एक साँसमें 'सह-अस्तित्व' और दूसरोमें अपने गुटसे बाहरवालोंके लिए दुर्वचनकी दुनाली ताने हुए यह महान् युगद्रष्टा और विश्वस्रष्टा साहित्यसेवी एकदम 'मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों एक साथ। मैं बन्दर और कलन्दर दोनों एक साथ'का रंग जमाने लगा। इसने खड़े-खड़े किसी देहलवी या पटनवी प्रकाशकसे, हज़ारोंके चेक कटवा लिये एडवांस रायल्टीमें, और किताबें कभी लिखकर नहीं दीं या पुरानी किताबोंकी ही हेराफेरी की, या फिर इसने अपने घरमें साहित्यिकको सप्रेम, सस्वागत रखा और इससे कुछ लिखवा लिया और बादमें रोज़के खानेका 'बिल' उपस्थित कर दिया। इसने कभी छायावादी चापलूसी एक हाथसे की और दूसरे हाथसे सिगरट और साम्यवादको फूँककर ऐसा पुल बाँधा कि आसेतु-हिमाचल इस रचना-शक्तिपर मुग्ध हो गये। इसने एक ओर प्रगतिवादका लाउडस्पीकर अपने हाथों थाम लिया और दूसरी ओर अपनी 'कुण्डलिया' पढ़वायीं, राशि-भविष्य देखे, बच्चेके लिए मानताएँ कीं और पीर-औलियाके दर्शन किये। इसने अपनी किताबोंकी दूकानदारी की और दोस्तोंसे पैसे क़र्ज़में लिये जो कभी वापस नहीं किये—पर 'प्रामाणिकताके साहित्यिक मूल्य' पर बड़े-बड़े लेख लिखे। कहाँतक गिनायें ? तो 'अमरूद' की साहित्यिक आन्तरिक जीवनीमें जितना पैठें उतना ही 'डबल टाक, डबल थिंक'का बड़ा-बड़ा आनन्द प्राप्त होगा। मसलन साम्प्रदायिकताको ले लीजिए—कभी 'अमरूद' हिन्दीको हेय समझकर उर्दूको उम्दा ज़बान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क़रार देते नहीं अघाते, कभी रूसमें उर्दूका अनुवाद हिन्दीसे ज़्यादा क्यों हुआ, इसपर 'हाय-हाय' करते, कभी साहित्यसम्मेलनसे छपे 'कोशों' की मज़म्मत करते और कभी विलक्षण जटिल भाषामें आलोचनात्मक लेख लिखते नज़र आते हैं। कभी आपको बुद्धके दर्शन और प्रदर्शनसे इश्क़ हो जाता है तो कभी आपमें-का ब्राह्मण या अब्राह्मण (यह अभी तक हमें पता नहीं लगा है कि दोनोंमें वदज़बान कौन कम या ज़्यादा है) बुलबुला उठता है। जहाँतक आपके भावजीवनका सम्बन्ध है, वह शायद 'है' हो नहीं। यह पुंसत्वहीन नायक, 'संजनी' की 'माया' में मनोहर कहानी लिख-लिखकर 'नायक-नायिका भेद' के विषयमें रिसर्चें करता है, परन्तु ऐसा सुना गया कि सामाजिक जीवनमें स्त्री-पुरुषके बीचमें काफ़ी बड़ी और मोटी लोहेकी दीवार होनेकी वजहसे इस दीवारके दोनों ओर अभी झाँकनेका उसने यत्न नहीं किया। हाँ, निष्फल प्रेमके दुअन्नी चवन्नीके हिसाबसे 'गीत' बहुत सारे लिखे [देखें—रेडियोका आम्नीवस कण्ट्राक्ट] पर 'गोविन्द' कभी नहीं मिले। वैसे यह चार पैसेके लिए रिक्शेवालेसे हुज्जत करनेवाला महान् मसिजीवी अपने-आपको मानवतावादका मसीहा मानता है। महानुभाव 'अमरूदजी' एक बार पिये हुए भी पकड़े गये थे, परन्तु पी हुई चीज़ कोई बड़ी चमत्कारिक नहीं थी, वह केवल विजया थी। भंगका सेवन आपने अपने प्रेम भंगके बाद शुरू किया, परन्तु निर्मम आलोचक कहते हैं कि प्रेम इनका शुरू ही नहीं हुआ था, जो भंग होता।

'अमरूद' इलाहाबादीका दूसरा गुण है ऊपरसे मन्द-मन्द मुसकान। मनमें काफ़ी गहरी घुमड़न, तरह-तरहकी मानवी दुर्बलताएँ, मसलन ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, मत्सर, असूया आदिकी—समायी रहती है, परन्तु इस सारी भीतरी कुढ़न की काईको ऊपर अम्भोजवदनसे छिपानेकी कलामें 'अमरूदजी' ऐसे अभ्यस्त हैं कि जब मिलेंगे तब मुसकराते हुए। आप उनके मुँहपर दस गाली दे दीजिए, वे किंचित् भी क्रुद्ध नहीं जान पड़ेंगे, अरविंदका-सा मनःसंयम उनमें अवतरित आपको जान पड़ेगा, पर किसी दिन आपको पता चलेगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि आपको जो आर्थिक नुक़सान उठाना पड़े, या आपकी किताबें जो कोई नहीं छापता या आप 'अहंकारी हैं' 'बोगस हैं', 'बकवास हैं', इत्यादि जो सुन्दर मतवाली फुसफुसाहटके रूपमें प्रस्तुत की जाती है उन सबके मूल प्रणेता हैं 'अमरूद' इलाहाबादी। मज़ेकी बात यह है कि यह मूल स्वभाव चाहे १९२७ हो या १९५७; चाहे 'अमरूदजी' मास्को या पीकिंग या रोम या लन्दन घूम आयें (कल्पनामें); या कटरा या महात्मा गांधी मार्ग या क्रासवेट रोड या रसूलाबाद या नवादामें ही डोलते रहें, चाहे 'अमरूदजी' अस्तंगत 'माधुरी', 'सुधा', 'जनयुद्ध' या 'हिन्दूपंच', 'शिशु' या 'महिला' या 'हिमालय' या 'पारिजात', 'अभ्युदय' या 'देशदूत', 'प्रतीक' या 'विज्ञान'में लिखते हों—सर्वत्र उनके इस महान् अपनी ही धुरीपर ही ढुलमुलायमान व्यक्तित्वकी छाप बराबर निखरती रही है। इसका शायद प्रधान कारण यह है कि 'अमरूद' इलाहाबादीने इलाहाबादके बाहरकी दुनिया कम देखी है। संकीर्णताको ही विस्तार और संकुचिताको उदारता माननेवाले 'दर्शन' भी इस दुनियामें पाये गये हैं। आप उन्हींके मानने वालोंमें-से हैं। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि यदि कभी 'कम्पल्सरिली' श्री 'अमरूदजी'को हिन्दुस्तानके किसी अन्य नगरमें बसना ही पड़े तो क्या हो—क्या उनका वही हाल नहीं होगा जो बम्बईके सिनेमा-क्षेत्रमें हिन्दी साहित्यिकोंका हुआ या कलकत्तेमें बंगाली लेखकोंकी नज़रमें वहाँके हिन्दी साहित्यकारोंका या पंजाबी प्रकाशकोंकी नज़रमें दिल्लीके हिन्दी लेखकोंका है। अभी-अभी समाचार मिला है कि श्री 'अमरूदजी' साहित्यक्षेत्रसे संन्यास ले रहे हैं और विंध्याचल या सतपुरा या नीलगिरि या अरावलीमें कहीं विश्राम प्राप्त करने जा रहे हैं। अब उम्मीद करें कि शायद विश्वसाहित्यमें जुगनूकी तरह जगमगानेवाला कोई अमर नक्षत्र या ज्योतिर्लिंग 'अमरूदजी' पैदा कर देंगे—पर उम्मीद कम ही है, चूँकि :

उम्र तो बीती यों टेक्स्ट-बुक लिखनेमें,
अब आख़िरी वक़्त क्या ख़ाक क्लासिक लिखेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ
काशी

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध
और अप्रकाशित सामग्रीका
अनुसन्धान और प्रकाशन
तथा लोक-हितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

: सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी ५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri